माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*, नित्या शुक्ला*, मधु गुप्ता*, दीपक आजाद*, नीरा जैन*

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) रमन सैनी* 9717039404

संवाददाता ईशा चौधरी*, दीपक कृष्ण नंदन*, श्री राम शर्मा*, विनोद चौधरी*

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

बिजनेस हैड अनुराग सोनी* 9828198745

मार्केटिंग सलाहकार राजेन्द्र कुमार शर्मा*, अनिल शर्मा*

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*, अजय शर्मा (8368443640)

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक*, बालकृष्ण शर्मा*, डॉ. रश्मि शर्मा*, डॉ. मीना शर्मा*, डॉ. नीति मिश्रा*, प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित

प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

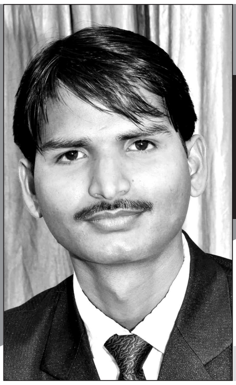

देश का संदेश

धारा 370 हटाओ मोदी जी...

रोहित कृष्ण नंदन

प्रधान संपादक

माही संदेश

mahisandesheditor@yahoo.com

फरवरी का महीना जो जख्म देकर गया है, उन जख्मों का सालों साल भर पाना मुश्किल है, लेकिन आप और हम देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर उन जख्मों पर मरहम लगाकर दर्द तो कम कर ही सकते हैं, देश इस समय उस दर्द से गुजर रहा है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती, पुलवामा आतंकवादी हमले में देश ने अपने सैनिक खोए हैं और सैनिकों के कद की तुलना कोई नहीं कर सकता, आज शहीद सैनिकों के परिवार का दर्द न तो बयां किया जा सकता है और न ही शब्दों में लिखा जा सकता है इसे बस महसूस किया जा सकता है, देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आपसे देश को बड़ी अपेक्षाएं हैं, कश्मीर मसले का हल अभी होना देश के लिए बेहतर है, धारा 370 को हटाना अभी उचित है, बस अब देर नहीं, क्या आपने उजड़ी हुई मांग नहीं देखी, क्या आपने बेटे और बेटी के सिर से पिता का साया उठना नहीं देखा, क्या आपने उस बहिन की पीड़ा देखी जो अब अपने भाई को कभी रक्षासूत्र नहीं बांध पाएगी, क्या आपने बूढ़े मां-बाप के आंसू नहीं देखे, आप मना नहीं कर सकते, आप प्रधानमंत्री हैं और देश के साथ आपने देखा है यह सब, मन व्यथित है जो कदम कई वर्षों पहले उठ जाना चाहिए था उस कदम को क्यों अपाहिज बनाकर छोड़ रखा है, अपाहिज कदम भी इस दौर में चलने का माद्दा रखते हैं और आप समर्थ हैं और जो समर्थ है उसे किस बात की व्यर्थ चिंता... देशहित में फैसला लीजिए आने वाली पीढ़ियां गर्व करेंगी देश के प्रधानमंत्री पर...रात दो बजे बाद जब मैं यह संपादकीय लिखकर सोया और सुबह जब आंख खुली तो भारतीय वायु सेना द्वारा पाक अधिकृत कश्मीर में जैश के आतंकी शिविर तबाह करने का समाचार मिला, सूत्रों के अनुसार तकरीबन 300 से अधिक आतंकवादी मारे जाने का अनुमान है, मंगलवार की सुबह आपने ये सराहनीय कदम बढ़ाकर जो फैसला लिया, इसे देश की आवाम के हक में बदल दीजिए, कश्मीर मसले का हल शीघ्र हो और धारा 370 जल्द से जल्द हटे। देशहित में जरूरी है यह कदम...जय हिंद **शेष फिर.....**

एक नजर यहां भी

जय जवान
सेना से कभी रिटायर नहीं होऊंगा- शहीद पुनीत नाथ दत्त — **रोहित कृष्ण नंदन** 5

जय हिंद
धारा 370 को खत्म करे सरकार — **मधुमिता भट्टाचार्जी नायर** 7
आतंक के खिलाफ सभी हों एकजुट — **डॉ. रेणु मिश्रा** 7
कड़ा व ठोस कदम उठाती रहे सरकार — **अनुपमा कृति (अर्चना)** 8
खुशनसीब हो कि हिंदुस्तानी हो — **श्रुति नायक** 8

चुनाव विशेष
सूरमाओं ने शुरू की अपनी-अपनी तैयारी — **सुरेश प्रताप** 9

जरूरी बात
सोशल मीडिया से फैलता प्लेग है 'फेक न्यूज' — **प्रीता व्यास** 11

नमन
समाज सेवा में सक्रिय रहकर बिताया जीवन — **डॉ. नीरू अग्रवाल** 14

कला संदेश
लाख की कला को है जीवन समर्पित- हाजी इकराम अहमद खान — **रोहित कृष्ण नंदन** 16

मन की बात
पापा की खुशबू लौट कर आयी (भाग- 3) — **नवीन जैन** (IAS) 18

गतिविधियां
प्रीत के रंग में रंगी सुमधुर काव्य महफिल 20

जीवन-संदेश
क्योंकि डर के आगे वो हैं — **ममता पंडित** 21
तब की तब देखेंगे — **कृष्णा भारिया** 21

काव्य-कलम 22

उपन्यास संदेश
उड़ती चील का अण्डा — **डॉ. मदन लाल शर्मा** 24

पिचकारी
होली में चुनावी रंग — **दीपिका शर्मा** 25

सिनेमा संदेश
'फिर वो ही दिल लाया हूं' जॉय मुकर्जी — **शिशिर कृष्ण शर्मा** 27

सलाम 28

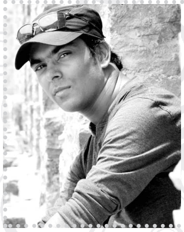

आवरण चित्र

अरुण मजूमदार*
जयपुर (राजस्थान)

निशान्त उपाध्याय*
चांदोली (उ.प्र.)

पाठक संदेश

माही संदेश पत्रिका का हर माह बेसब्री से इंतजार रहता है, फरवरी अंक में उम्र छोटी है उपलब्धियां नहीं में पूजा यादव जी के बारे में पढ़कर जीवन के प्रति और नजदीकी बढ़ गई, शिशिर कृष्ण शर्मा जी का आलेख फिर वो ही दिल लाया हूं- जॉय मुकर्जी के बारे में पढ़कर उन्हें नजदीक से जानने का मौका मिला, माही संदेश की लेखन सामग्री उम्दा है, हर बार की तरह इस बार भी दिल छू गई माही संदेश...

नीलम शर्मा- उदयपुर

v v v

माही संदेश के फरवरी अंक में अवनींद्र मान जी की जिंदादिली प्रेरणा दे गई, माही संदेश टीम को आभार इस तरह के साक्षात्कार नियमित रूप से शामिल करें तो और अच्छा रहेगा, बाकी माही संदेश पत्रिका का कंटेंट सबसे बढ़िया रहता है, हमें खुशी है हम इसके नियमित पाठक हैं।

निधि जैन- नई दिल्ली

विज्ञापन

ऐसे उम्मीदवार जो अपना उत्तम कला कौशल रखते हों मगर आगे बढ़ने का मुकाम नहीं मिला, सभी से साग्रह निवेदन और आमंत्रण है कि अपनी हस्तलिखित या टंकित प्रोफाइल ई-मेल करें और आपको ग्रूम-अप करने का एक अवसर हमें अवश्य दें ।

मेरा अनुभव और संपर्क निश्चित रूप से आपके हित में वृद्धि करने के साथ-साथ जीवन की असलियत से भी रूबरू कराकर आज के मायने बेहतर और कमाऊ बनने में मददगार होगा ।

royalensign105@gmail.com
or fix an appointment calling me on
7877756814

सेना से कभी रिटायर नहीं होऊंगा- शहीद पुनीत नाथ दत्त

राजस्थान को वीर भूमि कहा जाता है, और इस मिट्टी में पैदा होने वाले वीर सपूत देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने में कभी पीछे नहीं हटते। आज ऐसे ही वीर सैनिक की गाथा हम माही संदेश में आपके सामने लाए हैं, हाल ही जयपुर स्थित निवारू मिलिट्री स्टेशन की मुख्य सड़क का नामकरण लेफ़्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त की स्मृति में किया गया, इस अवसर पर लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त की मां श्रीमती अनिता दत्त व बहिन दिव्या दत्त उपस्थित थी। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट चेरिस मैथसन, दक्षिणी पश्चिमी कमान, का कहना था कि हमें गर्व है कि निवारू मिलिट्री स्टेशन, जयपुर की मुख्य सड़क का नामकरण शहीद लेफ्टिनेंट पुनीत की माताजी, उनकी बहिन व परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में किया गया।

बचपन की बात

सेकंड लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त का जन्म 29 अप्रैल, 1973 को राजस्थान के जोधपुर शहर में हुआ था। इनके पिता का नाम मेजर प्रमोदनाथ दत्त जो कि सेना में थे। मां अनिता दत्त के अनुसार पुनीत खेलकूद और पढ़ाई के साथ-साथ अन्य क्रियाकलापों में रुचि लेते थे। पुनीत की शिक्षा दार्जिलिंग और जयपुर में हुई। इन्होंने सेंट बैथनीज स्कूल, दार्जिलिंग सेंट जोसेफ एकेडमी, देहरादून, सेंट जेवियर्स स्कूल, जयपुर और टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर में अपनी पढ़ाई की। बचपन के दिनों का जब जिक्र चला तो पता चला कि पुनीत नाथ दत्त अपने मित्रों के बीच 'डिक्की' नाम से जाने जाते थे।

सेना में जाने को थे बेताब

शहीद पुनीत की बहिन दिव्या कहती हैं कि पिताजी और नाना जी भी आर्मी भी थे, सैनिक परिवार से संबंध रखने के कारण वह बचपन से ही सेना में जाने के इच्छुक थे। इसके लिए इन्होंने स्वयं को तैयार किया और सन 1991 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश लिया। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में बेहतरीन प्रदर्शन किया इसके फलस्वरूप 9 दिसंबर, 1995 में 1/11 गोरखा राइफल्स में कमीशन प्राप्त किया, डेढ़ वर्ष की इस अवधि के दौरान इन्होंने अनेक व्यावसायिक कोर्स भी पास कर लिए, वर्ष 1997 में इनकी यूनिट को जम्मू व कश्मीर में आतंकवादियों से निबटने के लिए तैनात किया गया।

डटकर लड़े और मिशन किया कामयाब

माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन शहीद पुनीत नाथ दत्त की बहिन दिव्या दत्त से बातचीत करते हुए।

19 जुलाई, 1997 को इनकी बटालियन को खबर मिली कि नौशेरा इलाके में एक मकान के भीतर कुछ विदेशी आतंकवादी छिपे हुए हैं, लेफ्टिनेंट पुनीत ने तीन मंजिला इमारत की तलाशी प्रारंभ की, शक मजबूत होने पर मोर्चे पर तैनात एक सैनिक को मकान पर फायरिंग करने को कहा तो जो आतंकी चुपचाप बैठे थे फायरिंग से उत्तेजित होकर जवाबी फायरिंग करने लगे। तीन घंटे तक लगातार चली इस फायरिंग में दोनों ओर से हमले हुए और मकान पर हैंड ग्रेनेड भी फेंके गए, कोई खास नतीजा न निकलता हुआ देखकर उनकी टुकड़ी के पास उस मकान को विस्फोटक से उड़ा देने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं बचा। किन्तु यह काम बेहद खतरनाक और जोखिम भरा था। लेफ्टिनेंट दत्त ने यह काम खुद ही करने का निश्चय किया। उन्होंने सैनिकों को कवरिंग फायर करने के निर्देश दिए और स्वयं दीवार फांदकर उस मकान में प्रवेश कर गए, आतंकी जो लगातार उन पर हमला कर रहा था पहले उन्होंने उसे ढेर किया, इसके बाद मकान में विस्फोटक लगाया और बाहर निकल आए, उन्होंने फिर उस मकान की पहली मंजिल पर ग्रेनेड फैंके, क्योंकि वहां से एक आतंकवादी उन पर लगातार फायरिंग कर रहा था। इन्हीं सभी हमलों के दौरान ही पुनीत नाथ दत्त के मुंह से खून आने लगा और जब उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाया गया, पहले तो लगा यह मामूली जख्म है लेकिन बाद में ज्ञात हुआ कि एक आतंकवादी की गोली उनके मुंह में घुसकर कान के नीचे से निकल गई है, कुछ ही घंटों बाद भारत की भूमि ने अपने लाल को खो दिया, लेफ्टिनेंट पुनीत वीरगति को प्राप्त हुए, बहादुरी की एक अनूठी मिसाल कायम करते हुए सेकेंड लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त ने आतंकवादियों का खात्मा कर उनके मिशन को नाकामयाब किया।

दिव्या दत्त ने आगे बताया कि पुनीत हमेशा कहते थे कि वह सेना से कभी रिटायर नहीं होना चाहते और उनकी यह बात सच भी हो गई, आने वाली कई पीढ़ियां उन्हें इसी तरह सैल्यूट करती रहेंगी। हमें इस बात की खुशी है कि भारतीय सेना और हमारा देश हमारे देश के शहीदों को याद रखता है।

देश के लिए अपनी जान की बाजी लगाने वाले पुनीत नाथ दत्त ने उच्च कोटि की वीरता, असाधारण नेतृत्व क्षमता और देशभक्ति का अभूतपूर्व परिचय दिया। सेकंड लेफ्टिनेंट पुनीत नाथ दत्त को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।

चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता का सम्मान

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त बद्रीलाल सोनी स्मृति में भीलवाड़ा में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। चन्द्रप्रकाश गुप्ता को भी कला में योगदान देने के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। चन्द्रप्रकाश गुप्ता 20 वर्षो से राजस्थान के शहीद सैनिकों के ऑयल पोर्ट्रेट बनाकर उनके परिजनों को भेंट कर रहे हैं। अब तक 250 से अधिक भेंट कर चुके हैं।

धारा 370 को खत्म करे सरकार

सर्व प्रथम मैं पुलवामा में शहीद हर देश के लाल को शीश नवाती हूं।

कितनी भी निंदा की जाये इस कु-कृत्य की वह कम है। इतनी जानें चली गयी और हम क्या कर रहे हैं बस वही आडम्बर- जरा सा चिल्ला लिये, मोमबत्तियां जला ली, डीपी काले कर लिये, बस! सरकार ने भी क्या कर लिया? राजदूत बुलवाये, कुछ पाकिस्तान-पाकिस्तान कर लिया, कुछ मंत्रियों ने कुछ बयान दे डाले। इस हमले का असली मुद्दा है कश्मीर और दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि पिछले लगभग सत्तर दशकों में भी किसी सरकार से इसका हल नहीं निकला!

सर्वप्रथम तो सरकार ये देखे कि इस तरह की घटना दुबारा ना होने पाये।

कश्मीर मसले को हल करे। वहां ज्यादा से ज्यादा नौकरियां पैदा करे ताकि वहां का युवा भटके नहीं। गरीब बेरोजगार को बरगलाना आसान होता है।

धारा 370 खत्म की जाये ताकि देश के हर हिस्से के लोग वहां जाकर उद्योग लगा पायें। जब तक वहां नौकरियों की कमी रहेगी, युवा आतंकवादी पनपते रहेंगे। धारा 370 खत्म हो तो हम आप जैसे लोग भी वहां जाकर निवास कर पायेंगे और मेनस्ट्रीम का हिस्सा बन उन लोगों को अपना बना पायेंगे।

अलगाववादी नेताओं के साथ सख्ती करें, जरूरी हो तो कारावास भेजें। धर्म के नाम पर इन लोगों ने देश को बांट रखा है और अपनी रोटियां सेक रहे हैं। भारत का खाते हैं और उसी को चोट पहुंचाते हैं। सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ में भी पाकिस्तान के खिलाफ कार्यवाही करने के लिये ठोस कदम उठाने पड़ेंगे। उसे आतंकवाद को पनाह देने वाला राष्ट्र घोषित करना पड़ेगा। हम जानते हैं कि युद्ध हर मसले का हल नहीं होता मगर एकबारगी अगर जरूरत हो तो युद्ध से भी मुंह नहीं मोड़ना चाहिये।

बाकी इस सरकार से बहुत आशा है कि वो कश्मीर मसले का हल शीघ्र निकालेगी और देश में अमन और चैन स्थापित करेगी। यही हम सबकी पुलवामा के शहीद जवानों को असली व सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जय हिन्द

मधुमिता भट्टाचार्जी नायर
गुरुग्राम, हरियाणा

आतंक के खिलाफ सभी हों एकजुट

डॉ. रेणु मिश्रा
गुड़गांव

पाकिस्तान का आतंकवाद आज दुनिया के लिए कैंसर बन चुका है जिसका खामियाजा उसके पड़ोसी देशों को सबसे ज्यादा भुगतना पड़ रहा है। पुलवामा का वर्तमान खौफनाक मंजर देश की आंखों के सामने है। देश के वीर जवानों को धोखे से मार देना और अपने ही देश के कुछ गद्दारों का इसे अंजाम देने में मदद करना घृणा के योग्य है। देश का खून खौल रहा है और वह दुश्मन से माकूल बदला लेना चाहता है। देश आज प्रधानमंत्री मोदी की तरफ आशापूर्ण दृष्टि से देख रहा है कि वह दुश्मनों से ऐसे बदला लें कि इतिहास याद रखे।

इस दिशा में कुछ सुझाव पेश हैं

देश के अंदर खुलेआम आतंकवाद का समर्थन करने वाले सेक्युलर और लिबरल जमात के लिए देशद्रोह का सख्त कानून लाएं जिससे आतंकियों को बौद्धिक संरक्षण देने वाले भी आतंकी घोषित हों। आपने विगत दिनों निम्न आदेश पारित किए जो प्रशंसनीय हैं;

- *एमएफएन का दर्जा खत्म*
- *सेना को खुली छूट*
- *हुर्रियत की सुरक्षा हटाई*
- *ऐसी कई कार्यवाही और भी चाहिएं।*

जो ऐतिहासिक भूलें हुई हैं उन सबको ठीक नही किया जा सकता, लेकिन कुछ का प्रतिकार किया जा सकता है। जैसे #Art370 को समाप्त करना। यह एक अस्थायी धारा है व इसे शेख अब्दुल्ला के दबाव में आकर देश के तत्कालीन नेतृत्व ने लागू कर जो भूल की उसके ही दुष्परिणाम अब हद से ज्यादा बढ़ गए हैं। न सिर्फ दुश्मनों को करार जवाब दें, बल्कि धारा 370 व 35ए को भी समाप्त करें। POK पर धावा बोल कर अपना कब्जा वापस लें और मुजफ्फराबाद को भारत में विलय कर लें। सिंधु समझौता को रद्द कर पाकिस्तान को पानी से मरहूम कर उसपर बिना युद्ध के भी तुरंत लगाम कसी जा सकती है। विश्व में उसे अलग-थलग कर आर्थिक रूप से पंगु बनाया जा सकता है। हम सभी देशवासी सरकार पर पूर्ण रूप से विश्वास करते हैं, हम पूरी दृढ़ता तथा ताकत के साथ सरकार के साथ खड़े हुए हैं।

खुशनसीब हो कि हिंदुस्तानी हो...

श्रुति नायक
पुणे

कुरुक्षेत्र में आखिरी सांसें ले रहे दुर्योधन ने भगवान कृष्ण पर दोषारोपण करते हुए कहा कि 'अगर आप छल न करते, तो हमारी जीत निश्चित थी'।

इस पर भगवान कृष्ण बोले 'तुमने अपने ही भाइयों से कपट किया, अपना वचन नहीं निभाया'।

इसके बाद, अगर कुछ मायने रखता है तो वह सिर्फ विजय है, फिर उसे चाहे जैसे हासिल करना पड़े!

आज भी, सिर्फ विजय मायने रखती है। क्योंकि हर भारतीय की रगों में आज वही विजय प्रेरणा बन कर दौड़ रही है। आज हम गर्व से कह रहे हैं कि हम इस मिटटी का हिस्सा हैं और रहेंगे, हमेशा।

आज का दिन, मजहबों, धर्मों, जाति, वर्णो का नहीं, आज का दिन बस देश को माथे पे लिए झूमने का दिन है। भारतीय होने और इस बात पर गौरव करने ही यही समय है फिर आप चाहे भारत में रहें या विदेश में।

अरे भाई आखिर आप दुनिया की दस महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में से एक हो। अब आपको अपने गेहुंए रंग पर या कच्ची अंग्रेजी पर शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं ।

क्योंकि आप उस धरती से जुड़े हैं जहां अरबों रुपयों का निवेश आने को है। आप की फिल्में दुनिया भर के लोगो का मनोरंजन कर रही हैं।

आप के खिलाड़ी विश्व के कोने कोने से जीत और सम्मान पा रहे हैं। आप की कला, आप का इतिहास आप का वैश्विक गौरव है।

तो सीना तान के चलो और मुस्कुराता अभिमान चेहरे पर छलकने दो। सालों से चलते आये खोखले रिवाजों, रिवायतों और सियासतों में आप को रोकने की हिम्मत नहीं है मेरे दोस्त! क्योंकि अगर आप एक ईमानदार करदाता हैं तो आप किसी सैनिक से काम थोड़े ही हैं। आप की पूँजी खौलता ईंधन बन कर मिराज विमानों को दौड़ा रही थी। **शेष पृष्ठ 15 पर**

कड़ा व ठोस कदम उठाती रहे सरकार

अनुपमा कृति (अर्चना)
नई दिल्ली

सर्वप्रथम वीरगति को प्राप्त हुए सभी जवानों को मैं सादर नमन करती हूँ। ये देश उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। चौदह फरवरी को सीआरपीएफ के जवानों के काफिले पर हुए कायराना, आतंकवादी हमले की खबर जब मिली तो दिल दहल सा गया। दु:ख, उदासी से दिल भर गया और आया जबरदस्त क्रोध भी। कब तक हमारे जवान आतंकवाद की न बुझने वाली आग में अपने प्राणों की आहुति देते रहेंगे?

आखिर कब तक?

इस दुखद एवम् कठिन समय में हम सभी एकजुट हो देश के साथ खड़े हैं। मुझे विश्वास है कि सरकार इस स्थिति से निबटने के लिये कड़े व ठोस कदम जरूर उठाएगी किंतु मेरी भी कुछ अपेक्षाएं हैं जो मैं आपके समक्ष रखना चाहती हूँ।

1. कश्मीर भारत का एक अभिन्न अंग है फिर उसे विशेष दर्जा दे अपने से भिन्न करने की क्या जरूरत है, इसलिये धारा 370 हटाई जाए।

2. जो आतंकवादियों की मदद करते हैं वे भूले भटके नौजवान नहीं बल्कि गद्दार हैं। उनसे सख्ती से निपटा जाए।

3. युद्ध की मैं पक्षधर नहीं क्योंकि अगर हम उनके हजारों मारेंगे तो सैकड़ों जवान हमारे भी शहीद होंगे पर हमारे जवानों के खून का बदला लेना भी जरूरी है इसलिये बेहतर रणनीति के साथ अनेक सर्जिकल स्ट्राईक करने की सख्त जरूरत है। साथ ही हमारे अपने जो गद्दार हैं, उनपर सख्त कार्यवाही करनी होगी।

बस अब ऊपरवाले से यही प्रार्थना है कि ये रक्तपात जल्द खत्म हो और हमारा देश एक खुशहाल देश बने।

लोकसभा चुनाव 2019 और पक्काप्पा का रण

सूरमाओं ने शुरू की अपनी-अपनी तैयारी

उत्तर प्रदेश में सपा, बसपा और लोकदल के गठबंधन ने एक मजबूत चुनौती पेश की है। यादव व जाट वोट के सहारे बसपा सुप्रीमो मायावती यूपी में अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन को बचाने की कोशिश में हैं।

उड़ता बनारस

लोकसभा चुनाव 2019 की अधिसूचना जारी होने से पहले कई सूरमा बनारस में अपनी जमीन तलाशने में जुट गए हैं। अब बनारस संसदीय क्षेत्र का समीकरण वह नहीं है, जो 2014 की 16वीं लोकसभा चुनाव के दौरान था। तब से अब तक पांच वर्ष में बहुत पानी गंगा में बह चुका है।

2014 में इस सीट से भाजपा के नरेन्द्र मोदी को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविन्द केजरीवाल ने चुनौती दी थी। तब कांग्रेस के प्रत्याशी अजय राय थे, जो तीसरे नम्बर पर थे। सपा के कैलाश चौरसिया भी मैदान में उतरे थे। लेकिन भाजपा के नरेन्द्र मोदी को टक्कर सिर्फ 'आप' के अरविन्द केजरीवाल दिए और बाकी प्रत्याशी अपनी जमानत भी नहीं बचा सके।

आम आदमी पार्टी, कांग्रेस, सपा, बसपा के अलग-अलग लड़ने का भरपूर फायदा भाजपा ने उठाया था और उसे कामयाबी भी मिली। लेकिन तब भाजपा को अपना दल और ओम प्रकाश राजभर की पार्टी भासपा का भी समर्थन था। अब परिस्थितियां बदल गई हैं। अब अपना दल विभाजित हो चुकी है।

अनुप्रिया पटेल का गुट जो भाजपा के समर्थन में था और वो खुद मोदी सरकार में मंत्री हैं ने भाजपा से नाता तोड़ने का संकेत दिया है। उनका मानना है कि सहयोगी दल की तरह भाजपा व्यवहार नहीं कर रही है। उन्होंने अपनी कुछ मांगें भाजपा के समक्ष रखी थीं और समाधान के लिए डेड लाइन वो तय की थीं। वो अवधि अब खत्म हो गई है। अब उनका कहना है कि अपना निर्णय लेने के लिए वो स्वतंत्र हैं। जबकि अपना दल का दूसरा गुट पहले से ही भाजपा के विरोध में मोर्चा खोला है। उसका आरोप है कि अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए भाजपा ने अपना दल को तोड़ा था।

दूसरी तरफ खबर यह है कि मोदी सरकार की मंत्री अनुप्रिया पटेल ने कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी से सम्पर्क साधा है और दोनों के बीच बातचीत भी हुई है। इसे लेकर राजनीतिक हल्के में अनेक तरीके के कयास लगाए जा रहे हैं। दरअसल अपना दल का गठन सोनेलाल पटेल ने किया था और पूर्वांचल की 7-8 सीटों पर उसका काफी असर है। वो अपने बल पर सीट तो नहीं निकाल सकती है, लेकिन राजनीतिक पासा पलटने में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। और यही कारण है कि 2014 में भाजपा ने अपना दल को अपने साथ रखा था।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार में कैबिनेट मंत्री और सुहेलदेव भासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर जबसे मंत्री बने हैं, तभी से योगीबाबा को आंखें तरेर रहे हैं। खुलेआम अपनी ही सरकार की कार्यशैली की आलोचना करते हैं। और भाजपा के नेता चुप्पी साधे हैं। अपना दल की अनुप्रिया पटेल और ओम प्रकाश राजभर यदि राजग से अपने को अलग करते हैं, तो इसका असर 2019 के लोकसभा चुनाव के समीकरण पर भी पड़ेगा।

सपा-बसपा-लोकदल-गठबंधन

उत्तर प्रदेश में सपा, बसपा और लोकदल के गठबंधन ने एक मजबूत चुनौती पेश की है। यादव व जाट वोट के सहारे बसपा सुप्रीमो मायावती यूपी में अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन को बचाने की कोशिश में हैं। जबकि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव अपने

पारिवारिक झगड़े से छुटकारा पाने के लिए बसपा के सहारे अपने पिता की विरासत को बचाना चाहते हैं।

बुआ-भतीजा दोनों की नजर और उद्देश्य 2019 का लोकसभा चुनाव नहीं बल्कि 2022 का यूपी का विधानसभा चुनाव है और इसका संकेत भी उन्होंने यह कहकर दे दिया है कि सपा-बसपा गठबंधन विधानसभा चुनाव में भी रहेगा। अखिलेश के चाचा शिवपाल यादव अलग दल का गठन कर सपा के जनाधार में सेंध ही नहीं लगा रहे हैं बल्कि भाजपा के हाथ में खेल भी रहे हैं।

दूसरी तरफ 16वीं लोकसभा के अंतिम सत्र में समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव ने यह कहकर कि हम चाहते हैं कि 'मोदी पुनः प्रधानमंत्री बनें' अखिलेश के राजनीति की हवा निकाल दिए हैं। यही नहीं बल्कि वो सपा-बसपा गठबंधन से भी नाखुश हैं। अपनी नाराजगी मुलायम सिंह यादव ने मीडिया के सामने सार्वजनिक भी कर दी है। दरअसल यूपी के ये जातीय क्षत्रप सिर्फ अपने स्वाभिमान और सम्पत्ति को बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। उन्हें अपने क्रियाकलापों के कारण सीबीआई और ईडी से डर लगता है। और केन्द्र की मोदी सरकार उन्हें डरवाती भी रहती है।

कांग्रेस एक हारी जंग जीतने की फिराक में है

यूपी के रण में कांग्रेस एक हारी हुई जंग जीतने की फिराक में है। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के संघर्ष व महासचिव प्रियंका गांधी के व्यक्तित्व के करिश्मे के बल पर वो अपनी खोई हुई जमीन पुनः हासिल करना चाहती है। लेकिन इस लड़ाई में उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती जातीय आधार पर गठित राजनीतिक दलों के क्षत्रप हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में अनेक जातीय घरौंदे बन गए हैं। ये क्षत्रप सिर्फ कांग्रेस को ही नहीं बल्कि भाजपा के सूरमाओं के लिए भी सिरदर्द बने हैं।

बनारस के पक्काप्पा का रणक्षेत्र! जिसे जेसीबी से किया जा रहा है समतल!

क्या है पक्काप्पा का रणक्षेत्र!

दरअसल 4-5 माह पूर्व स्थानीय अखबार, टीवी चैनल और कुछ लोगों ने यह प्रचारित करना शुरू किया कि पक्कामहाल में घरों को ध्वस्त करने के दौरान 5000 वर्ष पुराने मंदिर और मूर्तियां मिली हैं। इसे हमने चैलेंज किया और कहा कि यदि ऐसा है तो यह सिन्धु घाटी की सभ्यता के समानान्तर सभ्यता है और फौरन यूनेस्को को हस्तक्षेप करना चाहिए। फिर पुरातत्व विभाग के हवाले से खबर आई कि यहां सबसे पुराना विश्वनाथ मंदिर है, जो 1777 में बना था। बाकी मंदिर 18वीं सदी के हैं। इसके बावजूद एक मंदिर के सामने बोर्ड लगा है कि इसे चंद्रगुप्त ने बनवाया था। गुप्तवंश की स्थापना चंद्रगुप्त ने 320 ई. में की थी। अतः हम अब इसे गंगाघाटी की पक्काप्पा संस्कृति कहते हैं, जिसे ध्वस्त कर दिया गया है। यानी पक्कामहाल है हड़प्पा का छोटा भाई पक्काप्पा !

जातीय क्षत्रप कांग्रेस और भाजपा दोनों का खेल बिगाड़ने का दमखम रखते हैं। वो कब किसको गच्चा दे देंगे कुछ कहा नहीं जा सकता है। राष्ट्रीय राजनीति और जन सरोकार के मुद्दे से उनका कोई लेना-देना नहीं है। अभी पिछले सप्ताह ही लखनऊ में प्रियंका गांधी के रोड-शो में उमड़े जनसैलाब ने मीडिया की सुर्खियां बटोरी है। इससे कांग्रेसी कार्यकर्ता काफी उत्साहित हैं।

दूसरी तरफ भाजपा को अपने कार्यकाल का हिसाब भी देना पड़ेगा। 2014 की तरह 2019 में अब सिर्फ सवाल पूछने से काम नहीं चलेगा। 2014 में भाजपा के नरेन्द्र मोदी अपनी रैलियों में बड़े उत्साह से जो सवाल पूछते थे, वही सवाल अब उनका पीछा करते हुए जवाब मांग रहे हैं। नोटबंदी, जीएसटी, महंगाई, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से जुड़े सवाल मोदी सरकार का पीछा कर रहे हैं।

इन सवालों से पीछा छुड़ाने के लिए पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले के बाद बीजेपी बड़ी आसानी से देशभक्ति, सेना, राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व, मोदी, वंदेमातरम्, भारत माता की जय जैसे पुराने नारों पर लौट आई है। रोजगार, विकास और राफेल विमान की बात अभी कोई सुनने को तैयार नहीं है।

जो भी हो लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में बनारस में विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर व गंगा पाथवे तथा गंगा में बढ़ते प्रदूषण का सवाल भी उठेगा और जो सूरमा #पक्काप्पा के रणक्षेत्र में उतरेंगे उन्हें इसका जवाब देना पड़ेगा। पक्काप्पा के घर-मंदिर, गली, संस्कृति और जीवनशैली को जब 'विकास' अपने आगोश में समेट रहा था, तब वो कहां थे? खबर है कि विहिप के नेता प्रवीण तोगड़िया लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी को चुनौती देने बनारस आ रहे हैं। यदि यह खबर सच है, तो मुकाबला काफी दिलचस्प होगा। फिलहाल यह नहीं कहा जा सकता कि ऊंट किस करवट बैठेगा। लेकिन इतना निश्चित है कि बनारस में अब चुनावी समीकरण वह नहीं है, जो 2014 में था।

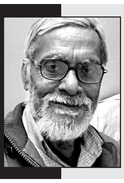

सुरेश प्रताप
बनारस

‘फेक न्यूज’ पर हुए अब तक के सबसे बड़े अध्ययन के बाद वैज्ञानिकों का कहना है कि झूठी खबरें बहुत तेजी से और बहुत दूर तक फैलती हैं।

सोशल मीडिया से फैलता प्लेग है ‘फेक न्यूज’

प्रीता व्यास

पिछले महीने मेरे एक फेसबुक मित्र, जो कि एक रिटायर्ड पुलिस अधिकारी हैं, ने एक खबर शेयर की –‘दिलीप साहब का इंतकाल हो गया’, ये चौंकाने वाली खबर थी। जब तक मैंने इसे देखा उनके स्टेटस पर 90 श्रद्धांजलियां पोस्ट हो चुकीं थीं। किसी भी भारतीय न्यूज चैनल या समाचार पत्र में दिलीप कुमार जी के जाने की कोई चर्चा नहीं थी, सो मैंने उनसे पूछा कि कहां मिली ये खबर आपको? और अगले दिन उनका उत्तर आया की ‘सॉरी, ये खबर गलत थी। ऐसी खबरें कहलाती हैं – फेक न्यूज।

सोशल मीडिया ने जहां लोगों के बीच संवाद का रास्ता आसान किया है वहीं दुर्भाग्य से कुछ खतरे भी पैदा किये हैं। अफ़वाहें फैलाना या उन पर विश्वास कर लेना सहज मानवीय स्वभाव का हिस्सा है, सोशल मीडिया ने उसे नया मंच मुहैया करा दिया है। ‘झूठ के पाँव नहीं होते’, ये पुराना मुहावरा है, अब नया मुहावरा होना चाहिए ‘सोशल मीडिया पर झूठ के पांव भी होते हैं और पंख भी।’

व्हाट्सऐप पर हर रोज टहलने वाले करोड़ों-अरबों संदेशों के बीच कुछ मैसेज, तस्वीरें या वीडियो ऐसे संदेश लेकर आते हैं, जो हमें डराते हैं या गुस्सा दिलाते हैं। जरूरी नहीं कि वो सच हों। लेकिन हम उन्हें सच मान लेते हैं। ये संदेश इतने ख़तरनाक हो गए हैं कि अब मौत की वजह बनने लगे हैं।

इस साल की शुरुआत में भारत के झारखंड में दो अलग-अलग घटनाओं में सात लोगों की पीट-पीट कर हत्या कर दी गई। बाद में पता चला कि इन सात लोगों को इस संदेह में मार दिया गया कि वो बच्चों की तस्करी में शामिल हैं। शक की शुरूआत हुई थी एक वॉट्सऐप संदेश से जो वायरल हो गया था। इस संदेश में कहा गया था कि लोगों को अजनबियों से बच कर रहना चाहिए क्योंकि वो ‘किसी बच्चा चोरी वाले गिरोह’ में शामिल हो सकते हैं। इस संदेश के बाद जैसे लोगों में पागलपन फैल गया। गांव वालों ने अपनी सुरक्षा के लिए हथियार जमा करना शुरू किया और हर उस अनजान व्यक्ति पर हमले करने लगे जिन्हें वो नहीं जानते थे। नतीजा हुआ सात लोगों की हत्या।

बदकिस्मती से फेक न्यूज हमारे दौर के सबसे बड़े विरोधाभासों में से एक हैं और ये सिर्फ व्हाट्सऐप नहीं, बल्कि फेसबुक, ट्विटर और दूसरे जरियों से

हम तक पहुंच रही है। पिछले कुछ सालों में फेक न्यूज इतनी बड़ी मुसीबत बनकर उभरी है कि इनकी वजह से लोगों की हत्याएं, हिंसा, दंगे और आगजनी हो चुकी है।

यू-ट्यूब पर एक विमान दुर्घटना का वीडियो वायरल हुआ जिसे करोड़ों लोगों ने देखा और बाद में ये राज खुला कि ये वीडिओ फेक था यानि नकली या झूठी खबर था। इसके दृश्यों को किसी अंग्रेजी फिल्म से चुरा कर दिखाया गया था। इसी तरह भारत में कई जगह व्हाट्स ऐप मेसैजेस की वजह से मॉब लिंचिंग की घटनाएं हुईं। स्वास्थ्य समस्या से जूझती जानी-मानी हस्तियों की मौत के खबर का फेसबुक पर फैल जाना बहुत आम है।

'फेक न्यूज' पर हुए अब तक के सबसे बड़े अध्ययन के बाद वैज्ञानिकों का कहना है कि झूठी खबरें बहुत तेजी से और बहुत दूर तक फैलती हैं। पिछले 10 सालों में अंग्रेजी में किए गए 30 लाख लोगों के सवा लाख से अधिक ट्वीट्स का गहन अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने कहा है कि झूठी और फर्जी खबरों में तेजी से फैलने की ताकत होती है। प्रतिष्ठित पत्रिका साइंस में छपी ये रिपोर्ट हालांकि सिर्फ ट्विटर पर फैलने वाले झूठ पर केंद्रित है लेकिन वैज्ञानिकों का कहना है कि यह हर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लागू होता है, चाहे वो फेसबुक हो या यू-ट्यूब।

अन्य देशों से अलग भारत में फेक न्यूज यानी झूठी खबरें वॉट्सऐप और मोबाइल फोन संदेशों के जरिए फैलती हैं क्योंकि अधिकांश भारतीयों के लिए इंटरनेट का झरोखा पहली बार उनके मोबाइल फोन के जरिए ही खुला। भारतीय दूरसंचार नियामक आयोग के अनुसार भारत में एक अरब से अधिक सक्रिय मोबाइल फोन कनेक्शन हैं। स्मार्टफोन लोगों तक तेजी से पहुंच रहा है, डेटा पैकेज सस्ते हो रहे हैं। इसकी वजह से अफवाह तेजी से और जल्दी फैलती है। ग्रामीण इलाके के लोगों के पास तेजी से सूचनाएं पहुंच रही हैं और वे ये नहीं मालूम कर पाते हैं कि इनमें सच क्या है, उन्हें तो जो जानकारी मिलती हैं, उन्हें वो सच मान लेते हैं।

फेक न्यूज को साझा करने में भावनात्मक पहलू का बड़ा योगदान है। फोन के व्हाट्सऐप ग्रुप में भी ऐसे मैसेज आते हैं, 'सभी भारतीयों को बधाई! यूनेस्को ने भारतीय करेंसी को सर्वश्रेष्ठ करेंसी घोषित किया है, जो सभी भारतीय लोगों के लिए गर्व की बात है। या फिर ये कि 'यूनेस्को ने जन गण मन को दुनिया का सबसे अच्छा राष्ट्रगान घोषित किया है'। ये मैसेज और इस तरह के कई दूसरे मैसेज फेक होते हैं लेकिन उन्हें फॉरवर्ड करने वाले लोग सोचते हैं कि वो 'राष्ट्र निर्माण' में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

भारत की प्रगति, हिंदू शक्ति और हिंदुओं की खोई प्रतिष्ठा की दोबारा बहाली से जुड़े संदेश तथ्यों की जांच किए बिना बड़ी संख्या में शेयर किए जा रहे हैं। इस तरह के संदेशों को भेजते हुए लोगों को महसूस होता है कि वे राष्ट्र निर्माण का काम कर रहे हैं। ऐसी खबरों को लोग हजारों की तादाद में रोज शेयर करते हैं और इसमें कोई बुराई नहीं देखते।

कुछ देशों में फेक न्यूज के पीछे राष्ट्र निर्माण की भावना की बजाय ब्रेकिंग न्यूज को साझा करने की भावना ज़्यादा होती है। फेक न्यूज या बिना जाँच-परख के खबरों को आगे बढ़ाने वाले लोगों की नजर में मैसेज या खबर के सोर्स से ज्यादा अहमियत इस बात की है कि उसे उन तक किसने फॉरवर्ड किया है। अगर फॉरवर्ड करने वाला व्यक्ति समाज में 'प्रतिष्ठित' है तो बिना जांचे-परखे या उस जानकारी के स्रोत का पता लगाए बिना उसे आगे पहुंचाने को वे अपना 'कर्तव्य' समझते हैं।

भारत में इस समस्या पर नजर डालें तो हिंदुत्व, राष्ट्रवाद, मोदी, सेना, देशभक्ति, पाकिस्तान विरोध, अल्पसंख्यकों को दोषी ठहराने वाले अकाउंट आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे एक खास तरह से सक्रिय रहते हैं जैसे वे कोई कर्तव्य पूरा कर रहे हों, इसके विपरीत, बंटे हुए समाज में इनके विरोधियों की विचारधारा अलग-अलग है, मगर मोदी या हिंदुत्व की राजनीति का विरोध उन्हें जोड़ता है। दूसरी ओर, मोदी विरोधी समूह भी फेक न्यूज फैलाता है लेकिन उसकी संख्या और उनकी सक्रियता तुलनात्मक तौर पर कम है और वे विपक्षी राजनीतिक नेतृत्व से उस तरह जुड़े हुए नहीं हैं जिस तरह हिंदुत्व वाले लोग हैं।

मजे की बात ये है कि एक रिसर्च से पता चला है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ट्विटर अकाउंट कुछ ऐसे लोगों को फॉलो करता है जो फेक न्यूज फैलाते हैं। प्रधानमंत्री मोदी का ट्विटर हैंडल @narendramodi जितने अकाउंट को फॉलो करता है उनमें से 56.2 प्रतिशत वेरिफाइड नहीं हैं, यानी ये वो लोग हैं जिनकी विश्वसनीयता पर ट्विटर ने नीले निशान के साथ मुहर नहीं लगाई है, ये लोग कोई भी हो सकते हैं।

प्रधानमंत्री इन अकाउंट को फॉलो करके उन्हें एक तरह की मान्यता प्रदान करते हैं, इनमें से ज़्यादातर लोग जिन्हें ट्विटर ने मान्यता नहीं दी है, वे अपने परिचय में लिखते हैं कि देश के प्रधानमंत्री उन्हें फॉलो करते हैं। इसके उलट कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी 11 प्रतिशत बिना वेरीफिकेशन वाले अकाउंट फॉलो करते हैं, वहीं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के मामले में ये आंकड़ा 37.7 प्रतिशत है। ये बात मुझे बी बी सी की एक खबर से पता चली।

पहले भी फेक न्यूज पर रिसर्च हुए हैं लेकिन वे किसी खास घटना पर केंद्रित रहे हैं, मिसाल के तौर पर किसी बम धमाके या प्राकृतिक आपदा के बारे में। लेकिन ताजा रिसर्च पूरे एक दशक

में, दुनिया के अनेक देशों में 2006 से 2016 के बीच अंग्रेजी में किए ट्वीट्स पर है। इस शोध के लिए वैज्ञानिकों ने एक खास 'एल्गोरिदम' बनाया, हजारों-लाखों ट्वीट्स में से उन पोस्ट को छाँटा जो सही और तथ्यपरक हों, ऐसा करने के लिए तीन मानकों का इस्तेमाल किया गया-पहला ये कि पहली बार ट्वीट करने वाला कौन है? इसमें ये देखा गया कि वह व्यक्ति कितना विश्वसनीय है, क्या उसका एकाउंट वेरिफाइड है? दूसरा, उसमें कैसी भाषा का इस्तेमाल किया गया है, क्योंकि विश्वसनीय लोग शुद्ध और प्रभावी भाषा में लिखते हैं। तीसरा मानक ये था कि किस तरह के लोग उसे रीट्विट कर रहे हैं, विश्वसनीय लोग फर्जी ट्वीट से बचते हैं।

सच को परिभाषित करना, उसकी जाँच करना अपने-आप में कठिन काम था, रिसर्चरों ने इसके लिए फैक्ट चेक करने वाली कई साइटों की मदद ली जिनमें स्नोप्स, पोलिटिकल फैक्ट और फैक्ट चेक शामिल हैं, इन साइटों की मदद से उन्होंने 2006 से 2016 के बीच के सैकड़ों ऐसे ट्वीट निकाले जो फर्जी थे, इसके बाद उन्होंने ग्निप के सर्च इंजन का इस्तेमाल करके ये पता लगाया कि फेक न्यूज कैसे-कैसे फैला। इस तरह उन्होंने 1 लाख 26 हजार ट्वीट निकाले जिन्हें 45 लाख बार रीट्वीट

खबर झूठी है या नहीं ये जानने का एक तरीका है कि इसके असर को खुद पर परखें। देखें कि समाचार पर आपकी कैसी प्रतिक्रिया है। क्या इसे पढ़ने से आप गुस्से, गर्व या दुख से भर उठे हैं। अगर ऐसा होता है तो इसके तथ्यों को जांचने के लिए गूगल में सर्च करें।

किया गया था, इनमें कुछ में दूसरी साइटों की फर्जी खबरों के लिंक थे, कुछ में लोग बिना लिंक के झूठ बोल रहे थे और कुछ में मीम का इस्तेमाल किया गया था।

शोधकर्ताओं ने पाया कि विश्वसनीय समाचार एक सीमित वर्ग में ही जाता है जबकि फेक न्यूज हर तरह के लोगों तक पहुँचता है, फेक न्यूज रीट्वीट होने की रफ्तार और व्यापकता के मामले में भारी पड़ता है। इस रुझान को समझाने के लिए शोधकर्ताओं ने कई उदाहरण दिए हैं। एक खबर आई थी कि ट्रंप ने एक बीमार बच्चे की मदद करने के लिए अपना निजी विमान दे दिया था, ये सही खबर थी लेकिन इसे सिर्फ 1300 लोगों ने रीट्वीट किया। दूसरी ओर, एक खबर आई कि ट्रंप के एक रिश्तेदार ने मरने से पहले अपनी वसीयत में लिखा है कि ट्रंप को राष्ट्रपति नहीं बनना चाहिए। ऐसा कोई रिश्तेदार था ही नहीं और खबर फर्जी थी लेकिन उसे 38 हजार लोगों ने रीट्वीट किया।

फेक न्यूज एक गंभीर समस्या है और इससे निबटने के तरीकों पर पूरी दुनिया के अग्रणी संगठनों को गौर करना होगा। कुछ सावधानियां हम-आप सब बरत सकते हैं। मसलन-किसी मैसेज को दूसरों को फॉरवर्ड करने से पहले उसकी हकीकत जांच लें ताकि झूठी खबर फैलाने वालों के हाथों इस्तेमाल न हों। जब आपको सोशल मीडिया के जरिये कोई जानकारी मिलती है तो ये जरूर चेक करना चाहिए कि अगर बात सच है तो देश-विदेश की दस-बीस भरोसेमंद साइटों में से किसी पर जरूर होगी। अगर आप पाते हैं कि ये मैसेज या जानकारी कहीं और नहीं है तो उसका भरोसा मत कीजिए।

जब आप कुछ भी ऑनलाइन पढ़ते हैं तो देखें कि इसे किसने पब्लिश किया है। क्या वो कुछ समय से स्थापित न्यूज पब्लिशर हैं और क्या उनका नाम चर्चित है जिस पर भरोसा किया जा सकता है। कोई भी पेशेवर संस्था ये जरूर बताती है कि उसकी जानकारी का स्रोत क्या है।

खबर झूठी है या नहीं ये जानने का एक तरीका है कि इसके असर को खुद पर परखें। देखें कि समाचार पर आपकी कैसी प्रतिक्रिया है। क्या इसे पढ़ने से आप गुस्से, गर्व या दुख से भर उठे हैं। अगर ऐसा होता है तो इसके तथ्यों को जांचने के लिए गूगल में सर्च करें। झूठी ख़बरें बनाई ही इस तरह जाती हैं कि उन्हें पढ़ कर भावनाएँ भड़कें जिससे कि इसका फैलाव अधिक हो।

अगर आप पाएं कि भाषा और वर्तनी की ढेरों गलतियां हैं और फोटो भी घटिया क्वॉलिटी की हैं तो तथ्यों की जरूर जांच करें। सारी बातों के अंत में, डिजिटल वर्ल्ड में सारी खबरें उसके दर्शक-पाठक पर निर्भर करती हैं कि आप इसे अपने सोशल मीडिया अकाउंट या चैट में शेयर करते हैं या नहीं। शेयर करें मगर जिम्मेदारी से।

सावित्री बाई फुले

समाज सेवा में सक्रिय रहकर बिताया जीवन

(03 जनवरी 1831-10 मार्च 1897)

डॉ. नीरू अग्रवाल
agrawalneeruy
@gmail.com

आपने सुना होगा कि पुरुष की सफलता के पीछे स्त्री का हाथ होता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि सावित्री बाई फुले की सफलता और समाजसेवा के पीछे महात्मा ज्योतिबा फुले का अमूल्य योगदान रहा। आज जब देश सावित्री बाई फुले को याद कर रहा है, तो ऐसे में महात्मा ज्योतिबा फुले के जिक्र के बिना उनकी उपलब्धि की चर्चा अधूरी रह जाएगी।

लड़कियों और महिलाओं के उत्थान के लिए ज्योतिबा फुले ने करीब डेढ़ सौ साल पहले ही काम शुरू कर दिया था। उनके काम इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। वे जितने बड़े विचारक थे, उतने बड़े ही समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक और क्रांतिकारी भी थे। ज्योतिबा फुले समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के बहुत बड़े हिमायती थे। खुद वे ज्यादा नहीं लिख पढ़ पाए, लेकिन उनका दृष्टिकोण, उनकी सोच, उनके विचार समाजहित के लिए थे। उन्होंने दलित समाज के लिए, खासकर महिलाओं के लिए खूब काम किया। उस समय समाज में कितनी ही बुराइयां थीं। छुआछूत का भाव, अस्पृश्यता, मंदिरों में महिलाओं और पिछड़ी जाति के लोगों के प्रवेश पर पाबंदी। महात्मा ज्योतिबा फुले ने जाति आधारित विभाजन और भेदभाव के खिलाफ जमकर आवाज उठाई।

ज्योतिबा फुले समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के बहुत बड़े हिमायती थे। खुद वे ज्यादा नहीं लिख पढ़ पाए, लेकिन उनका दृष्टिकोण, उनकी सोच, उनके विचार समाजहित के लिए थे। उन्होंने दलित समाज के लिए, खासकर महिलाओं के लिए खूब काम किया।

तब का समय और आज के समय में जमीन और आसमान का अंतर है। तब समाज में महिलाओं का जीवन बहुत ही मुश्किल भरा होता था, खासकर विधवाओं की स्थिति तो और भी दयनीय थी। महात्मा फुले ने उनके कल्याण के लिए काफी काम किया। जब समाज में कोई लड़की को पढ़ाना नहीं चाहता था, तब उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी शिक्षा के लिए 1848 में एक स्कूल खोला। ये स्त्रियों की शिक्षा के लिए खोला गया देश का पहला स्कूल था। उनकी जीवटता ऐसी थी कि जब लड़कियों को पढ़ाने के लिए कोई टीचर नहीं मिली तो अपनी पत्नी सावित्री जी को ही पढ़ा-लिखा कर इतना योग्य बना दिया कि वे स्त्रियों को पढ़ा सकें। कुछ लोगों ने उनके इस नेक काम में बाधा डालने की कोशिश की, लेकिन संघर्ष करने वालों की हार नहीं होती। पुणे के भिडेवाडा में पहले स्कूल की कामयाबी के बाद फुले दंपत्ति ने एक के बाद एक, लड़कियों के लिए तीन स्कूल खोल दिये।

दकियानूसी, रूढ़िवादी और पुरोगामी ब्राह्मणवादी ताकतों से उन दोनों ने सीधा वैर मोल ले लिया था. उन दिनों देश में दलित और स्त्रियों को शिक्षा का हक नहीं था. वे वंचित रखे जाते थे। ज्योतिबा-सावित्रीबाई ने इसी कारण वंचितों की शिक्षा के लिए गम्भीर प्रयास शुरू किये।

मनुस्मृति के अघोषित शिक्षाबन्दी कानून के विरुद्ध ये जोरदार विद्रोह था। इस संघर्ष के दौरान उन पर पत्थर, गोबर, मिट्टी तक फेंके गये पर सावित्री बाई ने शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य बिना रुके निरन्तर जारी रखा। फातिमा शेख और उनके परिवार ने इस काम में फुले दम्पत्ति का पूरा साथ और सक्रिय सहयोग दिया।

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र में इतना क्रान्तिकारी काम करने वाली सावित्री बाई का जन्मदिवस ही शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

अंग्रेजों के समय में जैसी औपचारिक शिक्षा थी, उसका मकसद 'शरीर से भारतीय पर मन से अंग्रेज' क्लर्क बनाना था। इसलिए उन लोगों ने ना तो शिक्षा का व्यापक प्रसार किया और ना ही तार्किक और वैज्ञानिक शिक्षा पर जोर दिया।

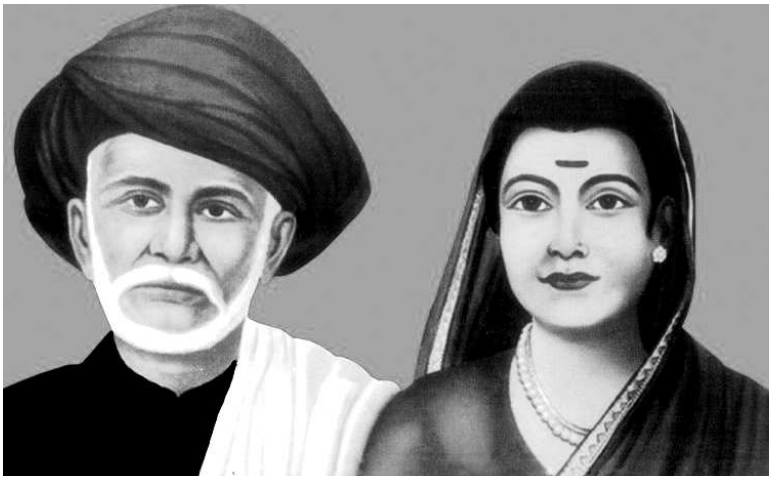

ज्योतिबा-सावित्री बाई ने सिर्फ शिक्षा के प्रसार पर ही नहीं बल्कि प्राइमरी लेवल पर ही शिक्षा में तर्क और वैज्ञानिक शिक्षा पर जोर दिया। दोनों ने अन्धविश्वासों के विरुद्ध जनता को जागरूक किया। आज जब ज्योतिषशास्त्र जैसे विषयों को शिक्षा का अंग बनाने के प्रयास हो रहे हैं, तमाम सारी अतार्किक चीजें पाठ्यक्रमों में घोली जा रही हैं तो ऐसे में ज्योतिबा-सावित्री के संघर्ष को याद करना बेहद जरूरी है।

उन्होंने शिक्षा का अपना 'प्रोजेक्ट', चाहे वो लड़कियों की पाठशाला हो या प्रौढ़ साक्षरता पाठशाला, सिर्फ जनबल के दम पर खड़ा किया और आगे बढ़ाया। अड़चनों और तमाम संकटों का सामना बहुत ही बहादुरी से किया।

सावित्रीबाई के समय भी ज़्यादातर गरीबों को शिक्षा नहीं मिलती थी। दलितों को भी पढ़ाई-लिखाई से दूर रखा गया था। आज शिक्षा का पहले के ज्यादा प्रसार है। फिर भी बड़ी संख्या में गरीब आबादी इससे वंचित है। दलितों के लिए पढ़ना अब भी आसान नहीं हैं।

आजादी के बाद सत्ता ने धीरे-धीरे शिक्षा क्षेत्र से हाथ खींच लिए। 1991 की निजीकरण, उदारीकरण की नीतियों के बाद तो शिक्षा पूरी तरह बाजार के हवाले कर दी गई। सरकारी स्कूलों की दुर्गति, प्राइवेट स्कूलों और यूनिवर्सिटी के मनमाने नियमों और खर्चीली शिक्षा की वजह से दलितों, पिछड़ों और गरीबों की पहुंच से शिक्षा और दूर होती जा रही है। आज एक आम इंसान बच्चों को डॉक्टर-इंजीनियर बनाने के सपने भी नहीं देख सकता।

अनिवार्य शिक्षा, छात्रवृत्तियां और आरक्षण 'खेत में खड़े (बिजूके)' की तरह हो गये हैं जिसका फायदा मेहनतकश तबके को नहीं या बहुत ही कम मिल पाता है।

सावित्री बाई को याद करते हुए विचार करने की जरूरत है कि उनके शुरू किये संघर्ष की आज क्या प्रासंगिकता है?

नयी शिक्षाबन्दी तोड़ने के लिए गरीब-मेहनतकशों की एकजुटता का आह्वान करें और सबके लिए मुफ्त शिक्षा का संघर्ष आगे बढ़ाने की जरूरत है।

सावित्री बाई की मृत्यु प्लेगग्रस्त लोगों की सेवा करते हुए 10 मार्च 1897 हुई थी। अपना सम्पूर्ण जीवन मेहनतकशों, दलितों और महिलाओं के लिए कुर्बान करने वाली ऐसी जुझारू महिला को नमन।

क्रमशः पृष्ठ 8 से

जो दुश्मन के आसमानों तक जाकर, उन्हें नेस्तनाबूत कर के, विजयी होकर लौटे हैं उन्मत्त न होना, पर आज उत्साहित जरूर होना । क्योंकि आज विश्व की बड़ी ताकतें थम कर आप की चर्चा कर रही हैं।छोटे राष्ट्र आप के नक्शेकदमों पर ध्यान देकर आप से प्रेरणा ले रहे हैं। दोस्तों के चेहरे पर गर्व दिख रहा है और दुश्मनों के चेहरे पर डर।

बस यही कारण है कि अब हर कदम हमें संभल के चलना है, दुनिया की नजरों में शक्ति के रूप में उभरे हिंदुस्तान को कहीं हमारी वजह से शर्मिंदा न होना पड़े।

न धर्म, न क्षेत्र, न जाति, न वर्ण, हमारी वैश्विक पहचान बस एक ही है कि हम भारतीय हैं। खुशनसीब हो कि हिंदुस्तानी हो।

जहा दाएं में पुलाव यखनी हो,
बाएं में दाल मखनी हो, पर पीते एक ही नहर का पानी हों, खुशनसीब हो कि हिंदुस्तानी हो।

जय हिन्द!

लाख की कला को है जीवन समर्पित- हाजी इकराम अहमद खान

कुछ दिन पहले राजस्थान के मशहूर चित्रकार बड़े भाई चंद्रप्रकाश गुप्ता के चौड़ा रास्ता, जयपुर स्थित देवदास स्टूडियो में इकराम अहमद खान साहब से पहली मुलाकात हुई थी, तब गुजरे जमाने की यादगार बातें इकराम अहमद खान साहब ने बड़े अपनेपन से जाहिर की, फिर बातचीत और आगे बढ़ी और इकराम साहब से अगली मुलाकात उनके घर पर होना तय हुआ। चांदपोल के पास स्थित सरोज सिनेमा के पास में रहते हैं लाख की कला को दुनिया भर में पहुंचाने वाले इकराम अहमद खान, मैं अपने सहयोगी माही संदेश पत्रिका के मार्केटिंग सलाहकार राजेन्द्र प्रसाद शर्मा के साथ था, फोन पर सुबह बातचीत के दौरान, मिलने का समय 11:30 बजे तय हुआ, तय समय पर पहुंचे तो इकराम साहब खुद हमें लेने के लिए हमारा इंतजार कर रहे थे, जमीन से जुड़े जिंदादिल व्यक्तित्व हैं इकराम अहमद खान साहब।

घर पहुंचकर फिर उनसे बातचीत का सिलसिला आरंभ हुआ....

भारत सरकार और राजस्थान सरकार के तत्वावधान में आयोजित कई कार्यक्रमों में कला के प्रोत्साहन के लिए इकराम अहमद खान ने 21 देशों की यात्राएं की हैं साथ ही विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सहित 24 पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं।

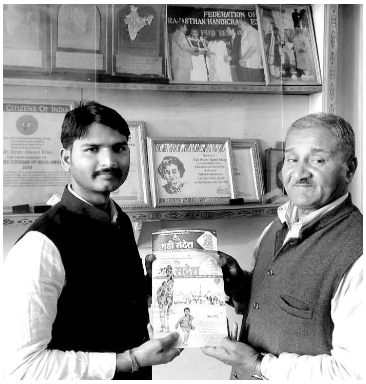

जब बढ़े कदम

इकराम साहब बताते हैं कि महज 9 वर्ष की उम्र से ही उन्होंने अपने पिता मरहूम अहमद हुसैन साहब के सान्निध्य में काम करना आरंभ किया। जब पिता के साथ पुत्र उसके पुश्तैनी काम को आगे बढ़ाता है तो जिंदगी के ये बेहतरीन पल होते हैं, इकराम आगे कहते हैं कि हमारे पूर्वज मूलतः ईरान से आए हैं ईरान से आकर सबसे पहले शाहपुरा-मनोहरपुरा के बीच में 'लखेर' नामक गांव में बसे,ईरान से अफगानिस्तान, लाहौर, दिल्ली से होते हुए यहां आए तभी से यह गांव लखेर नाम से जाना जाता है। उस समय वर्ष 1709 ई. में आमेर के महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर शहर का निर्माण कराने की योजना बना रहे थे। जानकारी मिलने पर लाख के कारीगरों को उन्होंने जयपुर में आमंत्रित करके यहां बसा दिया, हमारे पूर्वजों की आजीविका व भरण-पोषण का दायित्व महाराज सवाई जयसिंह ने उठाया। जयपुर शहर का यह निर्माण कार्य 1727 ई. तक जारी रखा।

बस बढ़ते जाना है...

इकराम कहते हैं कि मैंने वर्ष 1974 में स्नातक की परीक्षा पास की। पुश्तैनी काम को आगे बढ़ाने के साथ-साथ वर्ष 1976 में पंजाब नेशनल बैंक की नौकरी का भी प्रस्ताव आया लेकिन मन तो लाख में रमा था और जब मां ने तनख्वाह पूछी तो बताया कि 800 रुपए महीना तब मां ने कहा कि पुश्तैनी काम ही अच्छा है आजीविका भी बढ़ेगी और अपनी कला भी बची रहेगी। हाजी इकराम साहब के परिवार में इनकी पत्नी नाजिमा बेगम व तीन बच्चे, दो लड़के व एक लड़की है, तीनों ही स्नातक हैं और दोनों लड़के यही काम करते हैं।

वर्तमान में इकराम साहब पिछले 22 वर्षों से होटल ओबेराय ट्राइडेंट में एक दुकान पर अपनी कला को कला के चाहने वालों के लिए प्रदर्शित करते हैं। वर्तमान में इकराम साहब ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेंट करने के लिए लाख से बनी एक सुंदर कलाकृति बनाई है जिसे नाम दिया गया है।

प्रमुख पुरस्कार जो प्राप्त हुए

इकराम कहते हैं कि मेरे जीवन का मास्टर क्राफ्ट्समैन का पहला पुरस्कार वर्ष 1992 में भारत सरकार के डवलपमेंट कमिश्नर से प्राप्त किया इसके बाद वर्ष 2002 में विरासत इंटरनेशनल अवॉर्ड प्राप्त किया। इसके बाद वर्ष 2004 में शिल्प सम्मान, गोल्ड मेडल,, मिनिस्टिरी ऑफ आर्ट एंड कल्चर, भारत सरकार ने दिया। इसके बाद वर्ष 2007 में 'फेरहेक्स अवॉर्ड फॉर बेस्ट इनोवेशन इन क्राफ्ट' श्री श्रीरविशंकर ने बिड़ला ऑडिटोरियम में फैडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्ट्र्स ने दिया। वर्ष 2008 में इंटरनेशनल 'गोल्ड स्टार मिलेनियम' थाइलैंड में मिला यही अवॉर्ड वर्ष 2007 में प्रसिद्ध बॉलीवुड सितारे अमिताभ बच्चन को मिला। वर्ष 2008 में ही महाराणा मेवाड फाउंडेशन अवॉर्ड मिला। इसके साथ ही वर्ष 2008 में ही इंदिरा गांधी सद्भावना अवॉर्ड प्राप्त किया। वर्ष 2009 में राजीव गांधी यूनिटी, नेशनल अवॉर्ड, आउट स्टेंडिंग परफॉर्मेंस इन आर्ट एंड कल्चर के लिए पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के जन्मदिवस पर 20 अगस्त को भारत के तत्कालीन गृहमंत्री अजय माकन ने दिया। वर्ष 2011 में 'इंटरनेशनल कोहिनूर अवॉर्ड' बैंकॉक में दिया गया। इन्हें मिलने वाले अवॉर्डों की सूची बहुत लंबी है, वर्ष 2017 में राजस्थान सरकार द्वारा राज्य स्तरीय प्रशस्ति पत्र पुरस्कार मिला, इकराम साहब को अब तक 22 अवॉर्ड मिल चुके हैं। इन्होंने अपने सभी अवॉर्ड्स व सर्टिफिकेट्स फ्रेम करवाकर एक अलमारी में प्रदर्शित किए हुए हैं।

फिल्मों में भी लाख की कला का दिखाया है हुनर

इकराम अहमद खान ने बॉलीवुड फिल्मों में विभिन्न कलाकारों जैसे करीना कपूर, अक्षय कुमार,सोनम कपूर के लिए लाख से निर्मित कलाकृतियां बनाई हैं। अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में हरे राम हरे कृष्णा फिल्म की शूटिंग के समय दिल्ली के अशोका होटल में 200 चिलम भी बनाई।

इससे पहले इकराम अहमद खान के पिता अहमद खान साहब ने मशहूर फिल्म मुगले आजम में उपयोग में ली गई आधी ज्वैलरी डिजाइन की है।

लाख बनने की प्रक्रिया शुभकारी व जीवनदायी है लाख

इकराम कहते हैं कि लाख के कीड़े का नाम स्मेपति लेसीफर होता है, यह कीड़ा हांडी में पाला जाता है, चार महीने में ये कीड़े बड़े जाते हैं, फिर इन कीड़ों को पेड़ों में छोड़ा जाता है, तब वे कीड़े पेड़ के अंदर अपने मुंह की लार से लाख पैदा करते हैं और सूखने के बाद लाख तोड़ ली जाती है, फिर लोहे की कढ़ाही में पिघलाकर लाख बनाई जाती है, ग्रेड 'ए' की लाख हवाई जहाज में छेद भरने के काम में आती है। यही लाख जीवन रक्षक दवाईयों में भी काम आती है, हथियारों के लकड़ी के कवर में भी राख भरी जाती है, सोने के जेवर के अंदर भी लाख भरी जाती है, लाख का प्रयोग अनगिनत कामों में होता है। लाख शुभ मानी जाती है, लाख का बेहतरीन और सुंदर चूड़ा लाख का ही बनाया जाता है। जीवन दायी है लाख, लाख कभी भी किसी का जीवन नहीं लेती इतिहास में इसका प्रमाण है।

पद्मश्री के काबिल मगर नसीब में इंतजार

इकराम अहमद खान साहब का नाम वर्ष 2016 से लगातार 2019 तक पद्मश्री के लिए नामांकित होता रहा है जिसकी अनुशंसा कई बार जिला कलेक्टर ने की है लेकिन अभी तक बस यह पुरस्कार इंतजार की श्रेणी में ही इन्हें मिला है। कहते हैं कि कला की कद्र होती है लेकिन कब होगी इनकी कला की कद्र और कब सरकार इन्हें पद्मश्री अवॉर्ड से नवाजेगी यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

इनकी लाख कला की ये हस्तियां मुरीद

सोनिया गांधी, मुरलीमनोहर जोशी, राजनाथ सिंह, वसुंधरा राजे सिन्धिया, स्वर्गीय राजीव गांधी, मित्तल परिवार आदि।

पापा की खुशबू लौट कर आयी (भाग- 3)

नवीन जैन (IAS)
आयुक्त, श्रम एवं नियोजन विभाग

(गतांक से आगे...)

मक्खू शब्द से जुड़ी मेरे पापा की जिन्दगी की छोटी सी झलक आप लोगों को दिखाने का अदना सा प्रयास आप में से बहुत से लोगों को अपने प्रियजनों के किसी स्थान विशेष से जुड़े हुए इमोशनल पलों का रिमाइण्डर बन पाया हो तो मेरे द्वारा इस काम में लगाए गए समय की कुछ वसूली मैं कर पाउँगा। यादें बिन मौसम के बादलों की तरह कभी भी छा जाती हैं और शुष्क सी चल रही कामकाज की जिन्दगी की रोबोटिक भावनाओं को अनोखे अहसास के पानी से भिगो देती हैं और आप दिल से गीली मिट्टी की खुशबू की तरह कुछ पुराने लेकिन अपनेपन से सराबोर कीमती पलों को महसूस कर पाते हैं। दूसरे भाग में रूमाल का महिमामण्डन करने का भरसक प्रयास किया कि शायद आप लोगों को भी अपनी-अपनी जिन्दगी में रूमाल से जुडे हुए खट्टे-मीठे या कड़वे-कसैले अनुभवों का स्वाद जुबान पर महसूस हुआ हो। तो फिर आप लोगों को लगा ना कि रूमाल देखने में जितना सिम्पल है, उसकी कहानियाँ अनेक मौकों पे काफी इण्ट्रस्टिंग और डिस्कस्टिंग हो सकती हैं। पापा ने भी अपने रूमाल बहुत से अलग-अलग मौकों पर विभिन्न ऋतुओं के हिसाब से यूज किये होगें। मैं तो इसको इमेजिन करने भर से इमोशनल ही नहीं बल्कि ओवरव्हेलम्ड सा हो रहा हूं। अब शायद पहले की दो पोस्ट के बाद कुछ लोग मेरे साथ मेरे वाले लेवल पर आ चुके हैं।

घर को पालने वाला सारा ही सामान चाहे रेहड़ी हो या ठेला या थडी पर लगाया स्टॉल, अजीज होते हैं। इसी दुकान पर अप्रेल महीने में गर्मी की तमतमाती धूप में खड़े होकर कनक की फसल को सम्भालते समय इसी कमाल के रूमाल को गाँठ लगाकर टोपी की तरह सिर में फँसाये बहुत बार देखा और यकीन मानिये, यह हम दोनों भाईयों के लिए रूमाल के उपयोग की इनोवेशन थी।

यादें बिन मौसम के बादलों की तरह कभी भी छा जाती हैं और शुष्क सी चल रही कामकाज की जिन्दगी की रोबोटिक भावनाओं को अनोखे अहसास के पानी से भिगो देती हैं और आप दिल से गीली मिट्टी की खुशबू की तरह कुछ पुराने लेकिन अपनेपन से सराबोर कीमती पलों को महसूस कर पाते हैं।

यारों ये तो बताओ कि रूमाल क्या हमारे सुख-दुःख, स्वस्थ शरीर-बीमार अंगों, दिली खुशी-टूटे दिल, कम्फर्टेबल मौसम-दु:खदायी ऋतु, संतुष्टि वाली आत्मा-रोग युक्त काया आदि-2 के बारे में सिग्नल प्रेषित नहीं करते हैं? अगर हम हर शाम के खत्म होने पर या कभी देर रात तसल्ली से जूते-मौजे उतार कर मेज पर पाँव रखकर जेब से कपड़े के उस टुकड़े को निकाल कर हथेली में लेकर प्यार भरी निगाहों से देखते हुए बिना भाषा का सवाल पूछते हैं तो वो किसी जासूस की तरह सारी बातें कह देता, शायद सारे राज खोल डालता। किसी ईर्ष्यालु कुंवारी ननद की तरह सास के सामने चुगली कर के मानता। पुलिस के खबरी की तरह जेब में सौ का नोट जाते ही थानेदार के सामने पता उगल देता। अब पापा की बात करें तो जब मैं बारहवीं के बाद हॉस्टल में रहने पहली बार घर छोडकर सुबह 5.30 वाली चंडीगढ़ जाने वाली पहली बस पकडने से पहले उनके बिस्तर के पास जाकर शायद जिंदगी में पहली बार उनके पाँव छूने लगा तो तब तो उनींदे होने और पत्नी के सामने मजबूत दिखने की भावना के तहत आवेश को

रोक कर रह गये हों पर कुछ दिनों में कभी ना कभी तो बेटे के जाने के बाद खाली मकान देखकर आँखों के कोने में आयी नमी को रूमाल से ही सुखाते रहे होंगे। प्रायः मिडल क्लास के आदमी की यही ट्रेजडी होती है कि उसे इमोशनल होते समय भी बहीखाता रखना पड़ता है और अपनी भावनाओं का सार्वजनिक प्रदर्शन पता नहीं किस नियम के तहत वर्जित होने से मन में ही अनुभूति करनी पड़ती है। कुछ सालों बाद आईएएस में मेरे चयन की खबर लेण्डलाईन पर बात कर रहे मेरे भाई के मुँह से सुनकर पहला रिस्पोन्स भी शायद रूमाल की लम्बाई से ही नियंत्रित किया होगा। आम आदमी को जब उसकी उम्मीदों से ज्यादा और सपनों के करीब कुछ मिलता है तो गजब का जज्बाती हो जाता है और भावनाओं का अजीब सैलाब जुबान को फिर बात पूरी करने से रोक सा देता है। जीवन में आगे जब उनकी कोई बात हम भाईयों ने नहीं मानी होगी या जब हम पर खुद जीवन के भारी संकट आये होंगे तो हमारी भलाई की उस चिंता में आये सूखे-सूखे आँसू भी इस लक्की रूमाल की ही किस्मत में तो लिखे होगें। जिस दुकान का जिक्र मैंने प्रथम पोस्ट में किया था, उसकी चिंता हमेशा उनके लिए सर्वोपरि रही क्योंकि मिडल क्लास का आदमी अपनी रोजी-रोटी से जुड़ी मामूली चीजों को भी भारी वेटेज देता है और फिर ये तो उनके परिवार की जरूरतों की नैया को पार लगाने वाली मजबूत पतवार थी। घर को पालने वाला सारा ही सामान चाहे रेहड़ी हो या ठेला या थडी पर लगाया स्टॉल, अजीज होते हैं। इसी दुकान पर अप्रेल महीने में गर्मी की तमतमाती धूप में खड़े होकर कनक की फसल को सम्भालते समय इसी कमाल के रूमाल को गाँठ लगाकर टोपी की तरह सिर में फँसाये बहुत बार देखा और यकीन मानिये, यह हम दोनों भाईयों के लिए रूमाल के उपयोग की इनोवेशन थी।

हम लोगों के यहां जैन धर्म में साधु के दर्शन या उनकी आराधना करते समय मुँहपट्टी की मान्यता के बारे में तो आप सब लोग भी जानते हैं और अनेक बार पट्टी सुलभ नहीं होने पर यही अनोखा रूमाल नियम पालन करने का कितना सहज जरिया बन जाता है और पार्टनर की तरह कमाए गए पुण्य में से शेयरिंग भी नहीं मांगता है। चूँकि पापा ये दोनों काम खूब करते थे तो मैं समझता हूँ कि ये रूमाल उनकी आस्था के तारों से भी जुड़े रहे होंगे। मजदूरी का पसीना, बीमारी जनित द्रव्य, सर्दी लगने का असर, धार्मिकता का इफेक्ट जैसे माथे पर तिलक या साईड इफेक्ट जैसे उन्माद में माथे पर ही लगे पत्थर से बहता लहू, फालतू या प्यारी लगने वाली बेटी की विदाई, बिगड़े बेटे की पैदा की मुसीबत की लकीरें, रिश्तेदारों की बेवफाई से हृदय में उठी टीस, घरवालों की चिंता करने से चेहरे पर आयी शिकन, धूप से बचाव का हैण्डी तरीका, घाव लगने पर तुरन्त हाजिर फर्स्ट-एड उपचार - आप उस एक भावना का तो नाम लें जो ये वर्सेटाइल एक रूमाल सहेज कर नहीं रखता हो।

तो दोस्तों- रूमाल यादों का पिटारा भी है। कैसे? अभी तो सब आपने पढ़ा ये सब यादों का मेला, जो मेरे जेहन में आकर उँगलियों की करामात से फेसबुक की विंडो के जरिये आप सब को भी कुछ तो कह गया, इस मेले का आयोजक भी तो एक रूमाल ही था।

समाचार पत्र माही संदेश (मासिक)

फार्म नं. 4 (नियम 8 देखें)

1.	प्रकाशन स्थान	जयपुर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
4.	प्रकाशक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	क्या विदेशी हैं?	नहीं
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
5.	सम्पादक का नाम	रोहित कृष्ण नंदन
	नागरिकता	भारतीय
	क्या विदेशी हैं?	नहीं
	पता	50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार व हिस्सेदार हों।	रोहित कृष्ण नंदन 50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021

मैं रोहित कृष्ण नंदन एतद् घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक **1 मार्च, 2019 जयपुर**

ह. रोहित कृष्ण नंदन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

प्रीत के रंग में रंगी सुमधुर काव्य महफिल

साहित्यिक गतिविधियों की अग्रणी संस्था सुमधुर की काव्य महफिल-18 का आयोजन जनता कॉलोनी स्थित एस.जे. कॉलेज में किया गया, इस अवसर पर जयपुर व राजस्थान के अन्य शहरों से आये युवा कवियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, इस बार यहां आयोजित इस सुमधुर काव्य महफिल में 100 से अधिक काव्यप्रेमियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस बार सुमधुर काव्य महफिल-18 का विषय प्रेम पर आधारित था कार्यक्रम के आरंभ में धनराज दाधीच ने कैसे मैं सबको बता दूं ये मेरी दुश्वारियां, मैं बड़ा हूं सबसे घर में मुझपे जिम्मेदारियां सुनाकर महफिल में प्रीत का नया स्वरूप दिखाया, इसके बाद माला रोहित कृष्ण नंदन ने एक बात जरा कह दूं तो तुमसे, दब न जाये दिल में वो फिर से, फिर अनुराग सोनी ने तेरे जमाल की क्या सदाकत कहूं, तुझे इश्क करूं कि तेरी जियारत करूं, अभिलाषा पारीक ने थांसू प्रीत करी मैं, जीव री जड़ी, आंख्यां में काटू रात, जद से आंख लड़ी सुनाकर राजस्थानी भाषा में प्रीत का नया रंग घोला, फिर विशाल गुप्ता ने हम गुमसुम हो जाते हैं, बारिश की बातें आने पर, हमसे जानो क्या होता है, उनकी यादें आने पर इसके बाद अयूब खान बिस्मिल भव्य सोनी, सोनू श्रीवास्तव एजाज, अफजल, शोएब, यशपाल सिंह, दीपेंद्र सिंह, भास्कर शर्मा, हिमांशु, विवेक पारीक, पराग शर्मा, आहत, धारिणी दाधीच, दीपा सैनी, मुकेश, सांखला, संतोष संत, यादवेंद्र आर्य, चित्रा भारद्वाज, शुभम् रावत विजेन्द्र प्रजापत 'पोटर' सहित कुल 60 से अधिक कवियों ने अपनी काव्य रचनाएं पेश कीं, इस कार्यक्रम के दौरान ही सुमधुर के संस्थापक प्रवीण नाहटा, दीपा सैनी, के.के. सैनी, सतपाल सोनी, द्वारका प्रसाद, विरही द्वारा अनुराग सोनी को सुमधुर पोएट ऑफ द मंथ के खिताब से नवाजा गया।

माही संदेश सामाजिक सरोकार

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं

समाज सेवा के लिए समर्थ लोग आगे आएं

एक कदम बढ़ेगा तो बढ़ेगा हिंदुस्तान कपड़े दान करें नए नहीं तो अपने पुराने सही, किसी के लिए वही नए से कम नहीं

शहीद परिवार को आर्थिक सहयोग करें

किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई के लिए सहयोग करें

व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर गरीब बच्चों को पढ़ाकर आएं

सम्पर्क :

संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303

email-mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश प्रतिनिधि

जोधपुर प्रतिनिधि
शुभम पांडे*

बीकानेर प्रतिनिधि
दीप्ति पाठक *

उदयपुर प्रतिनिधि
रुचि शर्मा*

असम प्रतिनिधि
रेखा मोरदानी*

गुजरात प्रतिनिधि
चिराग कुमार *

कहानी

तब की तब देखेंगे

'नेहा तुमसे कितनी बार कहा है कि पढ़ लो पर तुम मेरी बात कभी नहीं सुनती' चिल्लाते हुए नेहा की मां ने कहा। 'क्या मां जब देखो तब पढ़ने की बोलती रहती हो, अभी तो मैं 9वीं कक्षा में हूं, असली पढ़ाई तो कॉलेज में होती है' नेहा ने मुंह बनाते हुए अपनी मां से कहा। मां ने समझाते हुए नेहा से कहा कि बेटी कॉलेज में दाखिला लेने के लिए भी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, पर नेहा तो एक कान से से सुनती और दूसरे कान से निकाल देती, फिर उसने धीरे से कहा कि तब की तब देखेंगे। परेशान होकर नेहा की मां रसोई में चली गई, तभी नेहा का भाई रोहन आया और उसने उत्सुकता से कहा मां मैं कक्षा में प्रथम आया हूं। रोहन को शाबासी देते हुए मां ने कहा बताओ तुम्हें क्या चाहिए, रोहन मां के पैर छूते हुए बोला कि मां मुझे बस आपका आशीर्वाद ही चाहिए। उम्र और कक्षा में रोहन, नेहा से दो साल छोटा था, पढ़ाई, खेल-कूद और बड़ों के सम्मान में रोहन आगे था। समय बीतता गया और रोहन एक बड़ा अफसर बना, वहीं नेहा इम्तेहान में फेल हो गई, उसने रोते हुए मां से कहा कि मां मैं फेल हो गई, मां बोली- मैं तुम्हें समझाती रही पढ़ लो तब तुम कान झाड़कर बोलती रही थी कि तब की तब देखेंगे तो अब देख लो, मां ने नेहा की तरफ देखकर कहा कि अगर तुम मेरी बात सुनना चाहती हो तो सुनो घर से अलग एक कमरा लो और वहीं मन लगाकर पढ़ो, नेहा ने हामी भर ली और वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, आज नेहा एक वैज्ञानिक है और उसे पूरा विश्व जानता है।

कृष्णा भारिया
कक्षा-6, सेंट एडमंड्स स्कूल, जयपुर

क्योंकि डर के आगे वो हैं

आप सोच रहे होंगे कि ये वो कौन है, ये दरअसल एक पूरी कौम है जो एक अलग ही मिट्टी की बनी हुई है।

मैं बात कर रही हूं सैन्य पत्नी की, वो जिसका रिश्ता देश की रक्षा के लिए पहली पंक्ति में खड़े सैनिक से, अपनी आखिरी सांस तक जुड़ गया है। ये रिश्ता जुड़ते ही वो महिलाओं की सबसे मजबूत कौम का हिस्सा हो जाती है।

कुछ वर्ष पहले रेलयात्रा के दौरान बातचीत में जैसे ही मैंने अपने सहयात्री को बताया कि मेरे पति सेना में हैं और फिलहाल कश्मीर में तैनात हैं, अचानक उनके चेहरे के भाव बदले और विस्मय और दया के मिश्रित भावों के साथ उन्होंने पूछा 'डर नही लगता', उस वक्त तो मैंने वो सवाल हंस कर टाल दिया लेकिन उनका वो सवाल मेरे दिमाग के किसी कोने में जमकर बैठ गया।

मैंने अपने आप से वही सवाल पूछना शुरू किया 'क्या मुझे डर नहीं लगता' क्या मेरे जैसी लाखों और महिलाएं जिन्होंने गर्व के साथ देश के सिपहसालारों को अपने जीवनसाथी के रूप में चुना है, क्या उन्हें डर नहीं लगता। मैंने अपनी और उन सबकी जिंदगी को गहराई से पढ़ना समझना शुरू किया और पाया कि डर तो है, लेकिन कुछ और है जो इस डर के आगे है, और वो है साहस, सहनशीलता, गर्व और आत्मविश्वास के साथ इस डर से लड़ता हुआ उनका व्यक्तित्व।

एक बार को सोचिए क्या हो अगर वो डर हमसे जीतकर हमारे अंदर घर करके बैठ जाये। हमारे आसपास हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में पसर जाए। क्या हम एक सामन्य जिंदगी जी पाएंगे। क्या हम वो दोहरी जिम्मेदारियां इतनी आसानी से निभा पाएंगे जो इस गठबधंन के साथ ही हमने स्वत: अपना ली हैं । अनुष्का शर्मा ने जो स्वयं एक फौजी परिवार से आती है, उन्होंने एक बार ये बात कही थी और मैं उन्ही के शब्द दोहरा रही हूँ कि 'हर सैन्य पत्नी इसलिए महान है क्योंकि वो अपने भीतर किसी कोने में छुपे हुए इस डर को कभी अपने बच्चों या बाकी परिवार तक कभी नही पहुंचने देती'। ये जो भी चिंता या आंशका होती है वो हमारे जहन में जन्म लेती है और वहीं दफन हो जाती है।

यकीन मानिए मैंने बहुत सी ऐसी महिलाओं को जानती हूँ जिनके पति बहुत ही संवेदनशील इलाकों में तैनात हैं लेकिन उनके माथे पर एक शिकन नही है। जिस बेफिक्री से अपनी सारी जिम्मेदारियां निभाते हुए वो अपनी जिन्दगी जीती हैं मुझे अचरज होता है, मैं खुद उनमे से एक होते हुए भी ये सोचने पर मजबूर हो जाती हूँ कि जानें ये किस मिट्टी की बनी है और इसीलिए में कहती हूँ कि 'डर के आगे वो है'।

उन्हें किसी वीरता पुरस्कार से नहीं नवाजा जाता न उनके अदम्य साहस की गाथा कहीं इतिहास में दर्ज होती है, लेकिन फिर भी उनका समर जारी है।

उनके इस जज़्बे को मेरा सलाम।
जयहिंद जय हिन्द की सेना।

ममता पंडित
जयपुर

हर शहीद का गिन गिन के बदला लेना सेना जी

हर शहीद का गिन-गिन कर के बदला लेना सेना जी
कायर-कपटी धोखेबाजों का हिसाब कर देना जी
हर शहीद का गिन गिन कर के बदला लेना सेना जी

1.

तुम्हें कसम है श्री राम की जो भारत के नायक हैं
तुम्हें कसम श्रीकृष्ण की है जो चतुराई के वाहक हैं
तुम्हें कसम है महादेव की तांडव फिर से दिखलाओ
जितने हैं गद्दार देश में सब पर गोली बरसाओ
इन श्वानों की लाशों की मीनार खड़ी कर देना जी
हर शहीद का गिन गिन कर के बदला लेना सेना जी

2.

भारतीयों का दुनिया में यूं किसी से कोई बैर नहीं
लेकिन पुलवामा के हमलावरों तुम्हारी खैर नहीं
कभी नींद न आये तुमको अब ऐसा सपना देंगे
एक एक आतंकी को हम जिंदा ही दफना देंगे
देश के दुश्मन श्वानों की पूछें सीधी कर देना जी
हर शहीद का गिन गिन कर के बदला लेना सेना जी

3.

छुपे हुए गद्दारों से भी हम सबको लड़ना होगा
पाकिस्तानी सोच के हर कश्मीरी को मरना होगा
ढूंढ निकालो ऐसे हर एक आतंकी पर वार करो
तलवारें खींचो म्यान से इन सबका संहार करो
ऐसे हर गद्दार की गर्दन धड़ से अलग कर देना जी
हर शहीद का गिन गिन कर के बदला लेना सेना जी।

डॉ. आदर्श पाण्डेय
उत्तर प्रदेश

क्या रिश्ता है

क्या रिश्ता है
उम्र का
जीवन के साथ!

उम्र के
किसी भी दौर में
नहीं छूटी
अल्हड़ता,
न टूटा
सौन्दर्य के प्रति
खिंचाव,
न गया बचपना!

तमाम संजीदगियों
के पीछे
खड़ा रहा
मासूम सा,
अनजान सा
मानव!

समय की यात्रा में
शिथिल होती है देह,
लेकिन नहीं टूटता
चेतना का प्रकाश,
उसकी
उमंग और नवलता!

काया और माया से
जब तब झाँकता है
चैतन्य,
उसी की हिलोरें
उठ्ती हैं
उम्र के हर दौर में!

देह और मन के क्षितिजों
के उस पार से
जीवन में उतरता है
चिर यौवन!

कृष्णगोपाल शर्मा
जयपुर

तपती रेत में

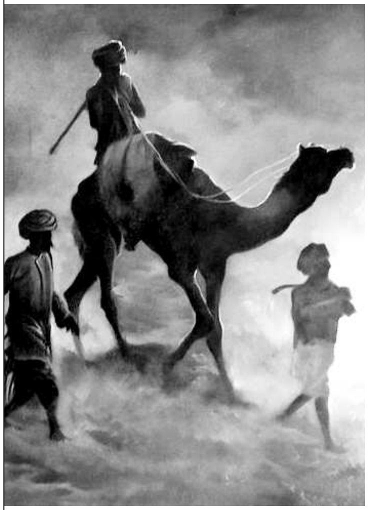

सुर्ख लावा हो गए हैं पांव
तपती रेत में

गांव ने हैं कर्ज बोये
मौत की फसलें उगाईं
अंजुरी-भर प्यास तड़पीं
आस ने चीखें दबाईं
आज फिर सपने पड़े हैं
पांव मोड़े पेट में

हांक फिर वैसी लगी है
पक्ष बस प्रतिपक्ष में है
सत्य पर सब जानते हैं
स्वार्थ केवल अक्ष में हैं
शाकभक्षी फिर मरेंगे
समय है, आखेट में

चेतना, बदलाव क्या बस
ताज का बदलाव ही है
जीत कैसी, जीत है यह
हार का ठहराव ही है
देखना फिर उग न आएँ
नागफनियाँ खेत में।

गरिमा सक्सेना
बैंगलूरू

कौन मुझमें खो गया है

अचानक कौन मुझमें खो गया है
उजाला भी अँधेरा हो गया है
मिरी आँखों को ये क्या हो गया है
किसी की नींद इनमें सो गई है
इन्हें खोलूँ तो सब धुँधला लगे है
करूँ जो बंद तो किरचें चुभे हैं
मिरी आँखों की ऐसी बदनसीबी
शब-ए-मातम का ये मायूस चेहरा
उदासी, दूर तक फैली उदासी
ये जलते जिस्म के धुऐं की बदबू
फलक बीमार जैसा लग रहा है
जमीं हाथों से छाती पीटती है
हवा में चूड़ियाँ सी टूटती हैं
किसी की माँग का सिंदूर है जो
फ़ज़ा में हर तरफ बिखरा पड़ा है
......मैं तेरी लाश लेकर रो रहा हूँ।

भारत भूषण पन्त
लखनऊ

जिन्दगी की गुल्लक में

ज्यादा कुछ जमा नहीं कर पाया।
कुछ चिल्लर है ,
जो कभी-कभी खनक कर
मुझे अमीर होने का एहसास कराती है।
नन्ही निश्छल चुलबुली चवन्नियां,
इश्क में भीगी आंखों की अठन्नियां,
चंद दुआओं के सिक्के
और कुछ अजीबोगरीब दोस्तों की ,
अजीबोगरीब करेंसी।
बस यही है,
मेरी गुल्लक की चिल्लर ।
जिसकी खनक मुझे अमीर होने का
एहसास कराती है।
जिन्दगी की गुल्लक में,
ज्यादा कुछ जमा नहीं कर पाया.....।

नित्या शुक्ला
इंदौर (मध्यप्रदेश)

ससुराल की पहली होली

मथुरा के पास राया के एक गांव में मेरी ससुराल है। मेरी पहली होली ससुराल में और वो भी गांव में हुई। शायद उस होली को जिदंगी भर नहीं भुला पाऊँगी।

गांव के सभी रिश्ते के देवर और आस-पड़ोस के बच्चे सभी कई दिनों से तैयारी में थे कि इस बार की होली नयी भाभी ओर वो भी जयपुर की के साथ।

सुबह होते ही सभी इकट्ठे हो कर दरवाजा पिटने लगे 'अम्मा ओ अम्मा' दरवाजा खोलो ओर भौजाई को बाहर निकालो नहीं तो आज हम दरवाजा तोड कर अंदर आ जाएंगे पर भौजाई से होली खेले बिना नहीं जाएंगे।

वो शहर की गोरी भी तो जाने गांव की होली का मजा। हम बहुत डर रहे थे ओर अम्मा हमें समझा रही थी कि बहू यह नहीं मानेंगे तुम हिम्मत करो और बाहर जाओ वर्ना यह दरवाजा तोड़ देंगे।

अम्मा ने कहा यहां लट्ठमार और रंगों से ओल गोबर कीचड़ से होली होती है। सो एक फटा बांस हमारे हाथ में पकड़ाकर बोली जाओ ओर मार-मार कर तोड़ दो इनके पांव।

पर हम ठहरे शहर के पढ़े-लिखे ऊपर से साड़ी पहना घूंघट करना समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करें मन ही मन पापा को कोष रहे थे कि कहां फंसा दिया। पर हमने भी हिम्मत नहीं हारी और जैसे ही अम्मा ने किबाड़ खोली बाप रे बाप हम तो इतने जने देख घबरा गए। हम कुछ समझ पाते इतने में तो उन सभी ने हमें भूत बना डाला रंग ओर गोबर कीचड़ से।

फिर क्या था साड़ी लपेटी और हिम्मत की और एक एक के पैरों में लट्ठ मारना शुरू किया ओर पूरे गांव में दौड़ा-दौड़ा कर होली खेली। पर हार नहीं मानी उस होली का रंग 15 दिन तक नहीं छूटा और गोबर कीचड़ की बदबू भी कई दिनों तक नहीं गयी।

खैर कोई बात नहीं हमने भी सब हुलियारों के छक्के छुड़ा दिये और यह कहने को मजबूर कर दिया कि शहर की गोरी भी कम नहीं। गांव की गोरी बन खूब दौड़ाया हम को और लट्ठ मार-मार कर हमारे तो पावों को सुजा डाला! उस दिन से गांव की होली से तौबा कर ली और आज तक होली नहीं खेली।

प्रेम लता मिश्रा
आगरा

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

पं. सत्यव्रत का परिवार भरा-पूरा था। उनके यहां सुख ही सुख था। दुःख का नाम नहीं था। इस परिवार की चर्या से यह स्पष्ट हो गया था कि सच्चे सुख का आधार सदाचार पालन ही है। जहां सदाचार है, वहां सुख है। जहां कदाचार है वहां दुःख ही दुःख है। सुख का मूल आधार संतोष है। संतोष ही सच्चा धन है। संतोषी व्यक्ति धन का नहीं होता, बल्कि मन का धनी होता है। संतोषी कभी शंकित-चिंतित और भयभीत नहीं होता। वह शंका-चिंता और भय से मुक्त रहता है। वह निश्चित होकर सोता है और निर्भय होकर जीता है। संतोष बुद्धि का स्थैर्य और मन का धैर्य है। संतोष वास्तव में ही आत्मा का दिव्य-दीप है। वह मानवता का विकास और दानवता का ह्रास है। संतोष से कामना नष्ट हो जाती है। सांतेषी जीवन में सच्चे सुख को जान लेता है। अति-संग्रही सदा दुःखी ही रहता है। वह सोते-जागते, उठते-बैठते, सदा धन-संग्रह के ही चिंतन में लगा रहता है। पं. सत्यव्रत और उनका परिवार पूर्णतया आत्म-निग्रही और पुण्य संग्रही था।

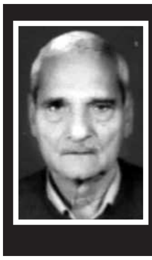

डॉ. मदन लाल शर्मा,
उपन्यासकार

सुख और दुःख का चोलीदामन का साथ है। सुख सत्य है और दुःख झूठ। सांचा सदा झूठ के पीछे ही छिपा रहता है। सांचा झूठ को कांछकर क्या करेगा। उससे उसे क्या मिलेगा। सुख सूर्य का दमकता प्रकाश है और दुःख रात्रि का अरूप अन्धकार। समरसता का भाव ही सत्य है, जिसमें सभी कुत्सायें सदा ग्राह्य और श्लाघ्य है। समरसता मानवता का ही दूसरा नाम है।

पं. सत्यव्रत के परिवार को अब अदृष्ट की नजर लगने वाली थी। मृत्यु की काली छाया अब उनके घर पर मँडराने लगी थी। उनके द्वार पर काल का डंका बजने लगा था। परन्तु इसका ज्ञान-भान स्वयं पंडित सत्यव्रत को भी नहीं था।

दीपक तले का अँधेरा स्वयं दीपक को ही दिखाई नहीं देता क्योंकि वह ऊपर की ओर ही देखता है। उसकी दृष्टि नीचे की ओर नहीं जाती।

कार्य-करण का नित्य सम्बन्ध है। बिना कारण के कभी कार्य नहीं होता और जैसा कारण होता है वैसा ही कार्य भी होता है। यद्यपि कारण किसी को दिखई नहीं देता। इसीलिए वह कार्य को कोसने लग जाता है। कभी-कभी तो वह ईश्वरीय अन्याय को ही अपने अनिष्ट का कारण मान बैठता है।

...क्रमशः अगले अंक में

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

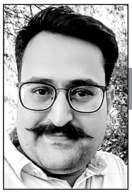

अनुराग सोनी
जयपुर

या धरती है धोरां री ईरी माटी हैं सोणा री।।
गोरा बादल री धरती की सुनाऊं अमर कहाणी।।
जाका कोरा धड़ ही काट दिया खिलजी रा मुंड हजार।
महाराणा री तलवार स्युं चमक्यो पूरो दिल्ली दरबार।
अठे एक नहीं सतरा खाई गोरी पृथ्वीराज स्युं मार।

या धरती है धोरां री ईरी माटी है सोणा री।।
गोरा बादल री धरती की सुनाऊं कहाणी।।
क्षत्राणयां रों जोहर ईमें पन्ना रो बलिदान है।
तो हाड़ी राणी री सीस दान की शान है।
ज्ये मीरा री भक्ति स्युं महक्यों पूरो राजस्थान है।

होली में चुनावी रंग

आया होली का त्यौहार, लाया रंगों की बौछार मतवाली रे, ये चंद पंक्तियां पढ़ कर हमारे जहन में एक पुराना गीत तरोताजा हो जाता है और हमें होली के रंग में डुबो देता है।

होली बेहद हर्षोउल्लास का त्यौहार है, होली का त्यौहार भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक पर्वों में अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है, यह हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक है, यह प्रेम, सौहार्द एवं बंधुत्व कुटुम्बकम का संदेश देती है, हमारा देश विभिन्नताओं का देश है, सभी धर्मों की अलग-अलग परंपराएं होती हैं, लेकिन इस पर्व को सभी संप्रदाय के लोग बड़ी धूमधाम से मनाते हैं, इस दिन सभी अपने गिले शिकवे मिटाकर एक दूसरे से गले मिलते हैं और रंग लगाते हैं, घरों में पकवान बनाए जाते हैं और गुंजियों का स्वाद तो लाजवाब होता है, कहीं-कहीं तो भांग घोटी जाती है, और लोग मस्त मलंग होकर नाच-गानों में मशगूल हो जाते हैं, वर्तमान में परस्पर जातिवाद, क्षेत्रवाद या अन्य राजनीतिक कारणों से जब लोगों के मन में विद्रोह की भावना आती जा रही है, ऐसे समय में होली की प्रासंगिकता बढ़ जाती है, जब समाज में किन्हीं राजनैतिक मुद्दों को लेकर असंतोष बढ़ जाता है तो परस्पर कटुता का भाव बन जाता है। ऐसे में प्यार भरा होली का रंग अनेक दिलों में नफरतें मिटाने में सहायक होता है। वैसे भी 2019 की होली राजनीति में कुछ खास तरह के रंग बिखेरती नजर आएगी, नई उमंग के रंग लेकर आएगी। अब लोकसभा चुनाव के कुछ ही दिन बाकी रहे हैं तो होली का रंग निखर कर आएगा। होली और चुनाव के आरंभ होने में अभी कुछ दिन बाकी हैं, लेकिन बाजारों में सभी पार्टियों के नेताओं की

> 2019 की होली राजनीति में कुछ खास तरह के रंग बिखेरती नजर आएगी, नई उमंग के रंग लेकर आएगी।

तस्वीर वाली पिचकारियों की बाजार में खूब बिक्री हो रही है। मोदी पिचकारी, केजरीवाल, राहुल, सोनिया, माया, अखिलेश पिचकारी लेकिन इस बार एक नया चेहरा भी देखने को मिल रहा है वो है कांग्रेस की कमान संभालने वाली प्रियंका गांधी वाड्रा की पिचकारी...

अब देखना यह है कि जाने कौनसी पिचकारी चुनाव के बाद भारत की जनता पर रंग बिखेरेगी, किस नेता का रंग ज्यादा निखर कर आएगा, यह तो चुनाव के बाद ही समझ आएगा, लेकिन होली पर ये चुनावी दंगल खूब चुनावी रंग बिखेरेगा। दुकानदारों को तो पिचकारी से ही लेना-देना है अब चाहे वो पिचकारी बीजेपी के नेता की हो, या कांग्रेस, आप आदि विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेताओं की, बस दुकानदार की यही अभिलाषा है कि ये पिचकारियां बिक जाएं लेकिन हम जनता को तो इंतजार है उस सरकार का जो हमें भ्रष्टाचार, आतंकवाद, गरीबी, महंगाई से बचाए और हमें खोखले वादों को छोड़कर भारत की जनता के लिए कुछ कर के दिखाए

खैर जो भी पार्टी रंग बिखेरेगी हमारी तरफ से सभी को इस अवसर पर होली मुबारक, बुरा न मानो होली है....।

दीपिका शर्मा

दिल्ली

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

अकेलापन दूर करने के लिए लिखीं कविताएं- पं. लोकनारायण शर्मा

प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन ,श्री सीमेंट के सहयोग से राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति से रूबरू कराने के उद्देश्य से आखर श्रंखला के अंतर्गत राजस्थानी भाषा के साहित्यकार पं. लोकनारायण शर्मा से साहित्यकार कृष्ण बिहारी भारतीय ने होटल आईटीसी राजपुताना में सार्थक संवाद किया। इस संवाद में पं. लोकनारायण शर्मा ने बताया कि अकेलेपन को दूर करने के लिए उन्होंने कविताएं

लिखना आरंभ किया, फिर धीरे-धीरे कविताएं लिखना आरंभ हुआ, कविताओं के लेखन के साथ-साथ पं. लोकनारायण ने 35 से 40 नाटकों में भी काम किया है, पं लोकनारायण कहते हैं नाटकों से मेरी भाषा समृद्ध हुई। कार्यक्रम के दौरान पं. लोकनारायण शर्मा ने अपनी पहली किताब 'अब तो पीऊं उजालो' काव्य संग्रह के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

योगिता शर्मा को मिला 'विवेकानन्द गौरव सम्मान'

जयपुर । युवा संस्कृति राजस्थान युवा छात्र संस्था द्वारा स्वामी विवेकानन्द जी की 156वीं जयंती पर आयोजित 'विवेकानन्द गौरव सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया । इस आयोजन के तहत जयपुर की योगिता शर्मा 'ज़ीनत' को साहित्य के क्षेत्र में 'विवेकानन्द गौरव सम्मान'

से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मनीष भंडारी, राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. के. कोठारी एवं जयपुर के कलेक्टर जगरूप सिंह यादव ने प्रदान किया। योगिता जयपुर की उभरती हुई कवयित्री हैं जो साहित्य की एकाधिक विधाओं यथा गीत , कविता , भजन एवं मुख्य रूप से ग़ज़ल की विधा में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं । योगिता 'ज़ीनत' को पहले भी राष्ट्रीय स्तर पर 'नवांकुर साहित्य सभा' द्वारा पूरे भारत के नवोदित कवियों से आमंत्रित रचनाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर दिल्ली में 'नवांकुर साहित्य सम्मान' और राज सारथी संस्था द्वारा 'तमन्ना उड़ान की - नारी शक्ति सम्मान' मिल चुका है ।

तस्वीर बोल उठी-12

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 मार्च) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर : चिन्मय जोशी

तस्वीर बोल उठी-11

रचना भेजने का पता

संपादक

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-11 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

राग दिल का मैं बजाता
धुन उमंगों से बनी है।
तार बजते धड़कनों से
पल-पल में मेरे मस्ती सनी है।।

कल्पना गोयल 'मनु'
जयपुर, (राजस्थान)

'दमदार अभिनेता, बेहतरीन चित्रकार'

इफ़्तेख़ार

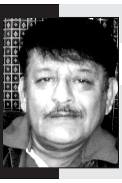

शिशिर कृष्ण शर्मा

फिल्म इतिहासकार

मो. 9821394486

सैयदाना इफ़्तेख़ार अहमद शरीफ!... एक बेमिसाल अभिनेता जिन्हें हम इफ़्तेख़ार के नाम से जानते हैं। इस नाम का जिक्र होते ही हमारे जहन में सिनेमा के परदे पर नजर आने वाले एक पुलिस ऑफिसर की छवि उभरती है। लेकिन आम दशक शायद इस बात से वाकिफ नहीं हैं कि वो ही इफ़्तेख़ार न सिर्फ एक बेहतरीन गायक और चित्रकार थे, बल्कि अभिनय के शुरूआती दौर में कुछ फिल्मों में बतौर हीरो भी नजर आए थे। हाल ही में हमारी मुलाकात इफ़्तेख़ार साहब की बेटी सलमा से हुई और उस मुलाकात के दौरान सलमा जी ने अपने पिता के बारे में हमारे साथ विस्तार से बातचीत की।

मूलत: जालंधर के रहने वाले इफ़्तेख़ार के पिता कानपुर में एक कंपनी में ऊंचे ओहदे पर थे। चार भाई और एक बहन में सबसे बड़े इफ़्तेख़ार का जन्म 26 फरवरी, 1922 को जालंधर में हुआ था लेकिन उनका बचपन कानपुर में गुजरा। मैट्रिक के बाद उन्होंने लखनऊ कॉलेज ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा लिया। गाने का उन्हें बेहद शौक था। वो सहगल के दीवाने थे और उन्हीं जैसा मशहूर गायक बनना चाहते थे। चूंकि उस जमाने में तमाम बड़ी म्यूजिक कंपनियां कोलकाता में थीं इसलिए करीब 20 साल की उम्र में इफ़्तेख़ार कोलकाता चले आए।

विशेष: आम धारणा है कि अभिनेत्री वीना इफ्तेखार की बहन थीं और यही सूचना इंटरनेट पर भी मौजूद है, जबकि असलियत में इस दोनों कलाकारों का आपस में कोई भी रिश्ता नहीं था।

उस दौर के मशहूर संगीतकार कमल दासगुप्ता एच.एम.वी. (कोलकाता) में नौकरी करते थे। कोलकाता के 'एम.पी.प्रोडक्शन' की साल 1941 में बनी हिट फिल्म 'जवाब' का संगीत कमल दासगुप्ता ने ही तैयार किया था। उस फिल्म का, काननदेवी का गाया गीत 'तूफानमेल...दुनिया ये दुनिया तूफान मेल' आज भी उतना ही लोकप्रिय है। कमल दासगुप्ता ने एच.एम.वी. कंपनी में इफ़्तेख़ार का ऑडिशन लिया। एच.एम.वी. ने इफ़्तेख़ार के गाए दो गीतों का एक प्राईवेट अलबम जारी किया, जिसके बाद वो वापस कानपुर लौट गए। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उन्हें 'एम.पी. प्रोडक्शन' की तरफ से एक टेलीग्राम मिला जिसमें उनसे तुरंत कोलकाता आने को कहा गया था। दरअसल इफ़्तेख़ार के बेहद संभ्रांत व्यक्तित्व और साफ जुबान से कमल दासगुप्ता इतने प्रभावित हुए, कि उन्होंने 'एम.पी. प्रोडक्शन' से इफ़्तेख़ार को बतौर अभिनेता नौकरी देने की सिफारिश कर डाली थी।

कानपुर में सईदा नाम की लड़की के साथ इफ़्तेख़ार का रिश्ता तय हो चुका था। 'एम.पी.प्रोडक्शन' से बुलावा आया तो वो कोलकाता आकर कंपनी में नौकरी करने लगे थे। लेकिन 'एम.पी. प्रोडक्शन' के बैनर में लंबे समय तक इफ़्तेख़ार की फिल्म शुरू ही नहीं हो पाई। उसी दौरान कोलकाता में अपनी ही बिल्डिंग में रहने वाली यहूदी लड़की हना जोसेफ से उन्हें इश्क हो गया और सईदा के साथ हुआ रिश्ता तोड़कर

इफ़्तेख़ार ने हना से शादी कर ली। शादी के बाद हना जोसेफको नया नाम मिला, रेहाना अहमद।

इफ़्तेख़ार की पहली फिल्म 'आर्ट फिल्म्स-कोलकाता' के बैनर में बनी 'तकरार' थी जो साल 1944 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म की नायिका उस जमाने की स्टार अभिनेत्री जमुना थीं। साल 1945 में इफ़्तेख़ार की दो फिल्में 'घर' और 'राजलक्ष्मी' रिलीज हुईं। 'घर' की नायिका जमुना और 'राजलक्ष्मी' की नायिका कानन देवी थीं। 'एम.पी. प्रोडक्शन' के बैनर में बनी फिल्म 'राजलक्ष्मी' से ही तलत महमूद ने भी बतौर गायक और अभिनेता अपना करियर शुरू किया था। साल 1947 में इफ़्तेख़ार 'ऐसा क्यों' और 'तुम और मैं' फिल्मों में नजर आए। उसी दौरान साल 1946 में उनकी बड़ी बेटी सलमा का जन्म हुआ और 1947 में उनकी पत्नी ने छोटी बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम सईदा रखा गया।

बंटवारे के दौरान इफ़्तेख़ार के माता-पिता, भाई-बहन सहित सभी करीबी रिश्तेदार पाकिस्तान चले गए। इफ़्तेख़ार ने भारत में ही रहना बेहतर समझा, हालांकि दंगे-फसाद की वजह से उन्हें कोलकाता छोड़ना पड़ा। साल 1948 में वो पत्नी और दोनों बेटियों को साथ लेकर मुंबई चले आए और खार स्थित एवरग्रीन होटल को उन्होंने अपना ठिकाना बना लिया। संघर्ष का दौर एक बार फिर से शुरू हुआ। लेकिन काम मिलना आसान नहीं था। सलमा जी कहती हैं, 'हम दोनों बहनें बहुत छोटी थीं और अक्सर हमारे खाने तक के लिए घर में कुछ नहीं होता था। घर की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मम्मी को किन्हीं मिस्टर पाटनवाला के ऑफिस में सेक्रेट्री की नौकरी करनी पड़ी। उधर छोटा-मोटा जैसा भी काम मिलता रहा डैडी करते रहे। लेकिन हमारे माली हालात में कोई बदलाव नहीं आया'।

कोलकाता में एक बार कानन देवी ने इफ़्तेख़ार का परिचय अशोक कुमार से कराया था। मुंबई आने पर इफ़्तेख़ार 'बॉम्बे टॉकीज' में अशोक कुमार से मिले। अशोक कुमार ने न सिर्फ इफ़्तेख़ार को पहचाना बल्कि साल 1950 में बनी बॉम्बे टॉकीज की फिल्म 'मुकद्दर' में उन्हें एक अहम भूमिका भी दी। आगे चलकर अशोक कुमार ने इफ़्तेख़ार से पेंटिंग भी सीखी और उम्र में उनसे काफी बड़ा होने के बावजूद वो इफ़्तेख़ार को हमेशा पेंटिंग का अपना गुरू मानते रहे। इफ़्तेख़ार कितने बेहतरीन चित्रकार थे, इसका पता उन पेंटिंग्स से चलता है जो उन्होंने खासतौर से फिल्म 'दूर गगन की छांव में' के शीर्षक गीत की बैकग्राऊंड के लिए बनाई थीं।

1950 और 60 के दशकों में इफ़्तेख़ार ने 'सगाई' 'साकी', 'आबशार', 'आगोश', 'बिराज बहू', 'मिज़ाज गालिब', 'देवदास', 'श्री 420', 'समंदरी डाकू', 'अब दिल्ली दूर नहीं', 'दिल्ली का ठग', 'रागिनी', 'बेदर्द जमाना क्या जाने', 'कंगन', 'नाचघर', 'छबीली', 'कल्पना', 'कानून', 'प्रोफेसर', 'रंगोली', 'बंदिनी', 'मेरी सूरत तेरी आंखें', 'दूर गगन की छांव में', 'संगम', 'शहीद', 'फूल और पत्थर', 'तीसरी कसम', 'तीसरी मंज़िल', 'हमराज़', 'संघर्ष', 'आदमी और इंसान' और 'इंतकाम' जैसी करीब 70 फिल्मों में छोटी-बड़ी सभी तरह की भूमिकाएं कीं लेकिन उनकी कोई खास पहचान नहीं बन पायी। संघर्ष बदस्तूर जारी रहा। और फिर आयी फिल्म 'इत्तेफाक'।

साल 1969 में बनी 'बी.आर. फिल्म्स' की फिल्म 'इत्तेफाक़' में

इफ़्तेख़ार पुलिस इंस्पेक्टर की अहम भूमिका में नजर आए थे। सलमा जी कहती हैं 'फिल्म 'इत्तेफाक़' ने हमारी ज़िंदगी ही बदल डाली। पुलिस की वर्दी डैडी पर इतनी जमी कि उसके बाद उन्हें काम की कमी नहीं रही। बहुत जल्द उन्होंने खार में अपना फ्लैट भी खरीद लिया। इसका श्रेय मैं अशोक कुमार अंकल को देना चाहूंगी जिनकी सिफारिश पर डैडी को 'बी.आर.फिल्म्स' में एंट्री मिली थी और 'इत्तेफाक़' से पहले वो उस बैनर की 'कानून', 'हमराज' और 'आदमी और इंसान' जैसी फिल्मों में भी काम कर चुके थे। हालांकि मैं तब तक शादी करके मुंबई छोड़ चुकी थी'।

सलमा जी की शादी साल 1964 में देहरादून के एक रईस ख़ानदान से ताल्लुक रखने वाले विपिनचन्द्र जैन से हुई थी। विपिनचन्द्र जैन एक्टर बनने मुंबई आए थे और सलमा जी से उनका ये प्रेमविवाह था। विपिनचन्द्र जैन के दादा रायबहादुर उग्रसेन जैन देहरादून के मशहूर कारोबारी थे जो नगरपालिका के चेयरमैन भी रह चुके थे। शादी के बाद सलमा जी पति के साथ देहरादून चली गयीं। करीब 15 साल उन्होंने देहरादून में गुजारे जहां वो एक कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ाती थीं। उस दौरान उन्होंने एक बेटे और एक बेटी को जन्म दिया लेकिन पति से तलाक हो जाने के बाद वो साल 1979 में वापस मुंबई लौट आयीं। फिर करीब 20 सालों तक उन्होंने सेक्रेट्री और मैनेजर के तौर पर निर्माता एन.सी.सिप्पी का ऑफिस संभाला।

उधर इफ़्तेख़ार के लिए 1970 और 80 के दशक बेहद व्यस्तताओं भरे रहे। कामयाबी के उस दौर में उन्होंने 'शर्मीली', 'महबूब की मेहंदी', 'गैंबलर', 'कल आज और कल', 'हरे रामा हरे कृष्णा', 'जवानी दीवानी', 'अचानक', 'जंजीर', 'मजबूर', 'दीवार', 'धर्मात्मा', 'शोले', 'कभी कभी', 'दुल्हन वोही जो पिया मन भाए',

'डॉन', 'त्रिशूल', 'नूरी', 'काला पत्थर', 'कर्ज', 'दोस्ताना', 'रॉकी', 'साथ-साथ', 'राजपूत', 'सदमा', 'इंकलाब', 'जागीर', 'तवायफ', 'अंगारे' और 'आवाम' जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया। 50 साल के अपने करियर के दौरान उन्होंने करीब 300 फिल्मों में अभिनय किया और 'बेखुदी' (1992) और 'काला कोट' (1993) उनकी आखिरी फिल्मों में से थीं।

सलमा जी बताती हैं, 'परिवार के तमाम सदस्यों के पाकिस्तान चले जाने के बाद भी उनके साथ हमारा संपर्क बना रहा। मेरे बड़े चाचा (स्वर्गीय) इम्तियाज अहमद पाकिस्तान टीवी के मशहूर अभिनेता थे और उन्हें पाकिस्तान सरकार ने नेशनल अवॉर्ड से नवाजा था। उनसे छोटे मुश्ताक अहमद पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाईंस में पायलट थे और अब वो अमेरिका में रहते हैं। इकलौती बुआ शमीम कराची में रहती थीं लेकिन अब वो जिंदा नहीं हैं। डैडी के सौतेले भाई और सबसे छोटे इकबाल अहमद चाचा और उनकी पत्नी डॉक्टर हैं और वो भी अमेरिका में रहते हैं। पाकिस्तान की यात्रा के दौरान एक बार रावलपिंडी में मेरी मुलाकात उन सईदा से भी हुई थी जिनका रिश्ता कानपुर में डैडी के साथ हुआ था। वो मुझसे बेहद गर्मजोशी से मिलीं। तब मुझे पता चला कि उन्होंने ज़िंदगी भर शादी ही नहीं की'। (विशेष : आम धारणा है कि अभिनेत्री वीणा इफ्तेखार की बहन थीं लेकिन ये सच नहीं है। सलमा जी के अनुसार वीणा और इफ्तेखार का रिश्ता केवल पारिवारिक मित्रता का थाद्य इफ्तेखार की सिर्फ एक ही बहन थीं जिनका जिक्र ऊपर किया जा चुका है।)

इफ़्तेख़ार की छोटी बेटी सईदा के पति एम.आई.शेख जुहू-मुंबई में रहते हैं। वो सिएट टायर्स में मैनेजर के ओहदे पर थे और सईदा से उनके दो बच्चे हैं। एक रोज पता चला कि सईदा को कैंसर है। करीब 5 सालों तक वो अपनी बीमारी से लड़ती रहीं। और फिर 7 फरवरी 1995 को वो अपनी लड़ाई हार गयीं। बेटी की मौत के सदमे को इफ़्तेख़ार बर्दाश्त नहीं कर पाए और अचानक ही उनकी डायबिटीज बहुत ज्यादा बढ़ गयी। उन्हें मुंबई के उपनगर मालाड (पूर्व) स्थित 'सूचक अस्पताल' में भरती कराया गया लेकिन उनकी हालत बिगड़ती चली गयी। आखिरकार बेटी की मौत के महज 24 दिनों बाद, 1 मार्च 1995 को इफ़्तेख़ार भी चल बसे।

सलमा जी से हमारी मुलाकात 15 अप्रैल 2013 की शाम अंधेरी (पश्चिम) के सात बंगला इलाक़े में स्थित उनके फ्लैट पर हुई थी। उस मुलाकात के दौरान हमारे साथ देहरादून के वरिष्ठ रंगकर्मी गजेन्द्र वर्मा भी मौजूद थे जो उन दिनों निजी काम के सिलसिले में मुंबई आए हुए थे। सलमा जी ने बताया कि उनकी बेटी की शादी हो चुकी है और वो लंदन में रहती हैं। उनके बेटे विशाल जैन मुंबई में रहते हैं लेकिन उन दिनों वो पारिवारिक काम के सिलसिले में देहरादून में थे। सलमा जी ने हमें अपनी अम्मी श्रीमती हना जोसेफ उर्फ़ रेहाना अहमद से भी मिलवाया। 90 साल की श्रीमती रेहाना अहमद उन दिनों बेहद बीमार चल रही थीं।

हाल ही में सलमा जी ने हमें फोन करके बेहद दुखद सूचना दी कि बीते 27 मई को उनकी अम्मी का इंतकाल हो गया है।

हवामहल

जैसे जीवन में हर दिन नया होता है, ठीक वैसे ही राजस्थान की सियासत है, यहां से गुजरने वाली हवा देश की सियासत का रुख तय करती है, बात बड़ी है देर में समझ आएगी, क्योंकि कई बातें दीवारों के पीछे होती हैं और दीवारों के भी कान होते हैं यह जरूरी और छोटी सी बात अक्सर लोग भूल जाया करते हैं मगर हम बंजारे ठहरे सच्चाई जो गाया करते हैं, राजस्थान में सत्ता का परिवर्तन जैसे हुआ सब जानते हैं और सच्चाई तो यह है कि पिछली सरकार के कई भक्त दबे मुंह गलती भी स्वीकार करते हुए कह रहे हैं हां परिवर्तन रुक भी सकता था मगर अब चिड़िया चुग गई खेत वाला हाल है, खैर नई सरकार भी कम नहीं है जो गलती पुरानी सरकार ने की उसी के फलस्वरूप सत्ता पाई है, नई सरकार में भी कुछ चेहरे हैं जो सरकार में आने को आतुर हैं, बस छटपटा रहे हैं कि कैसे न कैसे करके लोकसभा का टिकट मिल जाए अब टिकट फेसबुक और व्हाटसएप से मिलता तो हम भी भाई कम मशहूर नहीं है सोशल मीडिया पर, इस बंजारे की भी अपनी बड़ी फैन फॉलोइंग है, पुरानी सरकार में भी होड़ मची है टिकट पाने की, अब देखना दिलचस्प होगा कि राजनीति का ऊंट किस करवट बैठेगा, टिकट किसे मिलेगा ये तो वक्त बताएगा, लेकिन टिकट कैसे मिलेगा इस पर जोर लगाओ क्योंकि ये पब्लिक है सब जानती है, इसलिए भविष्य के मेरे नेताओं (जैसा कि आप खुद को मान चुके हो) जनता के बीच आओ सोशल मीडिया के रस्ते बीच से न गुजर जाओ, फिर मत कहना टिकट नहीं मिला, अब तो बंजारे ने भी चेता दिया है, अखिलेश अंजुम साहब की गजल का शेर याद आ गया...*आपसे अब तक निकटता यूं रही अपनी, बीच में इक कांच की दीवार हो जैसे...*

जीवन के हवामहल की हर खिड़की कोई न कोई हवा दे ही जाती है, बंजारा तो घूमता रहता है, इन हवाओं को ही हमें महसूस करना है, खैर बंजारा फिर मिलेगा अप्रैल में.. मेहनत करें फुल क्रेडिट मिलेगा नहीं तो अप्रैल फूल मिलना तो तय है....

बंजारा

दिल्ली दरबार

भारत में लुटे अपने कमंडल और दिल्ली में छिनी अपनी वीणा रहित नारद के नारायणी मुख से भारत सम्बंधित तथ्यों को अति गंभीरता से लेते हुए कई कालों पश्चात् सुदर्शन चक्र स्टार्ट कर जगत नारायण भगवन विष्णु भुकटी ताने शीरसागर स्थित और स्थिर शेषनाग की शैय्या से उठ खड़े हुए और बेशुमार आकाशगंगाओं, ग्रहमंडलों और धूमकेतुओं को अपने नेत्रों से भेदते हुए अपने प्रिय ग्रह पृथ्वी की ओर ताका। प्रभु के नेत्रों की लपट प्रदूषित पृथ्वी के चारों ओर घूमने लगी। एक आध सुनामी कैटरीना जैसे तूफान उठे। भूकंपों की भूमिकाएं बंधी और अंत में प्रभु की आँखें भारत पर केंद्रित हुईं और प्रभु ने पल भर में ही आर्यभूमि पर बिलबिलाती लोकतांत्रिकता का विश्लेषण कर डाला। शीरसागर में हलचल हुई...शेषनाग ने फन हिलाए...सुदर्शन चक्र की गति तेज हुई। अर्थात् नारायण पृथ्वी पर भारत कल्याण हेतू जाने के लिए तैयार होने लगे। नारद समझाने लगे–'प्रभु कृपा आज अवतरण ना लें, आज भारत बंद है, सभी भक्त व्यस्त हैं सड़कों पर!' और उस दिन अवतरण टल गया और अगले दिन के लिए अवतरित होना तै हुआ।

अगले दिन भगवन बस तैयार ही थे कि अफजल गुरु की आत्मा के पीछे लगे मुखबिर ने हैदराबाद के विस्फोट की खबर नारद के जरिये भिजवा दी। पत्नी देवी लक्ष्मी आयीं और वर्तमान काल में सैंकडों रावणों के देश में लचर सुरक्षा के चलते अवतरण रोक गयीं।

अवतरण आवश्यक था, शास्त्र पुराणों के अनुसार भी और अवतरणस्थली की स्थितियों अनुसार भी। सो, भगवन ने नारद से कहा–'हे मुनिवर...आर्यभूमि कुछ शांत और सुरक्षित हो जाये तो अवतरण कार्यक्रम रखा जाये...क्यों...आप क्या कहते हैं..!'

कमंडल वीणा की विरह से वीरान हुए मुख से नारद ने कहा–'...हे जगत नारायण ..भगवन तब तो अनादिकाल तक भी आपका एक अवतार पैंडिंग पड़ा रहेगा..!'

...क्यों...क्यों मुनिवर...! नारायण चौंके।

...इसलिए प्रभु...भारत में सुरक्षा और शान्ति...!...परसों बंद था तो कल बम...आगे बजट और उस पर बकवासें...फिर तुरंत बाद 2019...की महानौटंकी के लिए फुट-फुटफौटोल, खींचा-खांची। फिर पता नहीं फिर किसके हाथों पतवार..पार लगायेगा या मंझधार डुबायेगा...ज्यादा खायेगा या थोड़ा खायेगा का फिर बोल-होहल्ला ...बाकी माकूल मौसमी मामले बिना धरने, प्रदर्शनों, रैलियों, बमों के शोर शराबे यहां इस लोक तक आते ही रहते हैं..इस कारण हे मेरे प्रभु ...मैं वीणा कमंडल बिन और आप बिन अवतार लिए इसी लोक में ठीक हैं...वो लोक अब भगवानों लायक नहीं...शैतानों लायक है..!

तो अवतार कैंसल!

(मात्र मनोरंजन हेतू)

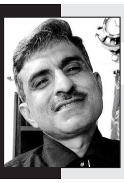

रमन सैनी